सत्यमेव जयते

मेवाड़ दर्पण

उप क्षेत्रीय कार्यालय उदयपुर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार

सत्यमेव जयते

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता बढ़ाने के लिए दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई0 (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

सत्यमेव जयते

मेवाड़ दर्पण

हिंदी पत्रिका

वर्ष 2023-24 | अंक 04 | केवल विभागीय परिचालन हेतु

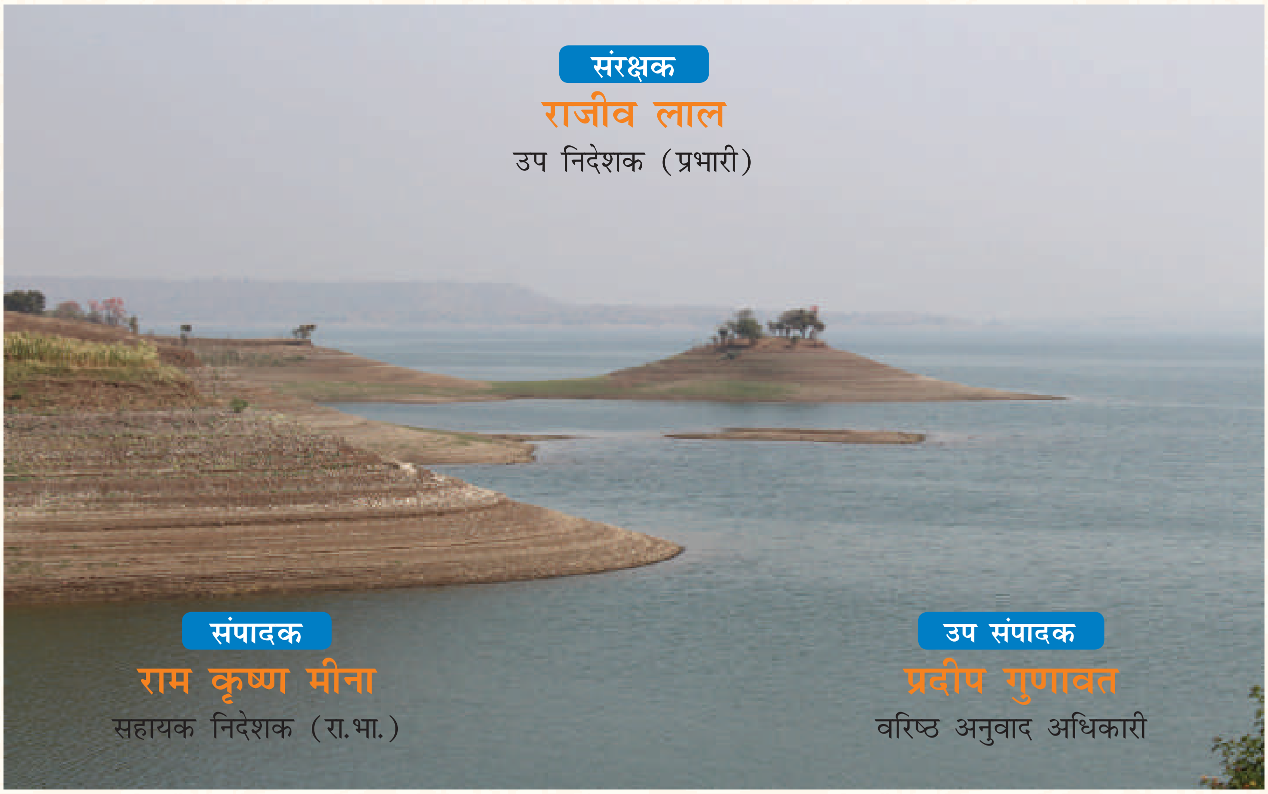

संरक्षक
राजीव लाल
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादक
राम कृष्ण मीना
सहायक निदेशक (रा.भा.)

उप संपादक
प्रदीप गुणावत
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

प्रकाशक
उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
5, भूपालपुरा, आर.के. प्लाजा, शास्त्री सर्कल के पास, उदयपुर - 313001
दूरभाष: 0294-2418806 ईमेल-sro-udaipur@esic.nic.in

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं की मौलिकता, उनमें व्यक्त विचार व तथ्यों का उत्तरदायित्व संबंधित लेखक का है । इनसे संपादकीय या विभागीय सहमति आवश्यक नहीं है।

मुख पृष्ठ: चित्तौड़गढ़ किला / इस पृष्ठ पर: बांसवाड़ा चित्र: सौजन्य: श्री राजीव लाल

अनुक्रमणिका

क्र.स.	लेख/कविता/विषयवस्तु	लेखक का नाम	पृष्ठ सं.
1	पत्रिका परिचय		1
2	अनुक्रमणिका		2
3	संदेश	डॉ. (श्री) राजेन्द्र कुमार, महानिदेशक	3
4	संदेश	सुश्री टी. एल. यादेन, वित्तीय आयुक्त	4
5	संदेश	श्री मनोज कुमार सिंह, मुख्य सतर्कता अधिकारी	5
6	संदेश	श्री रत्नेश कुमार गौतम, बीमा आयुक्त (राजभाषा)	6
7	संरक्षक की कलम से	राजीव लाल, उप निदेशक प्रभारी	7
8	संपादकीय	राम कृष्ण मीना, सहायक निदेशक (प्र.रा.भा.)	8
9	अदृश्य सहारा	कमलेश कुमार मीना, सहायक निदेशक	9-10
10	राजस्थान का श्रीअन्न	कृपा राम, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	11
11	प्रेरक प्रसंग : यशस्वी जायसवाल का संघर्ष	अशोक कुमार बाटड़, सहायक, रोकड़ शाखा	12-13
12	ध्यान (Meditation) - कविता	हर्षित सैनी, प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा	13
13	सामाजिक सुरक्षा एवं सरकारी नीतियाँ	अंकुश कुमार चतुर्वेदी, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	14
14	घर की खिड़कियों से	श्याम सुंदर महावर, बहु-कार्य कार्मिक, समन्वय शाखा	15
15	टीचर जो हूँ	श्रीमती निर्मला, मेंटोर, दिल्ली नगर निगम, शिक्षा विभाग धर्मपत्नी श्री राजीव लाल	16
16	हँसना एक कारगर दवा	कृतिका गौतम, बहु-कार्य कार्मिक, रोकड़ शाखा	17
17	कार्यालय में राजनीति से बचने के उपाय	राजीव रंजन, सहायक, समन्वय शाखा	18-19
18	सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्व	मोहित दायमा, बहु-कार्य कार्मिक, वित्त एवं लेखा शाखा	19
19	मेवाड़ केसरी	रोहित गुप्ता, प्रवर श्रेणी लिपिक, हितलाभ शाखा	20
20	ईमानदारी (शब्द नहीं- सोच है)	आशुतोष शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	21
21	राणा जी के उदयपुर	राकेश कुमार कुमावत, सहायक, राजस्व शाखा	22-23
22	वो पुराने दिन	जीतेश मीणा,बहु-कार्य कार्मिक, प्रेषण शाखा	24
23	ई-ऑफिस	अश्वनी कुमार बैरवा, सहायक, वित्त एवं लेखा शाखा	25-26
24	....माँ....	अमर चन्द, प्रवर श्रेणी लिपिक, प्रशासन शाखा	27
25	आशा	लवी खत्री, बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा	27
26	पुस्तकों का महत्व	कमलेश शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक, वित्त एवं लेखा शाखा	28
27	क्या फर्क पड़ता है	आशीष शर्मा, सहायक, विधि शाखा	29
28	योग के लाभ	आशीष शर्मा, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	30
29	कार्यालय की गतिविधियाँ-कैमरे की नजर से	राजभाषा शाखा	31-33
30	खालसा पेट्रोल पंप पर हुए भयानक अग्नि कांड की कहानी ईएसआईसी बनी जीवनदायिनी	कमल कुमार, सहायक, राजस्व शाखा	34-35
31	भारत का गाँव	संदीप भावसार, आईटी सहायक	36
32	संघर्ष	रामावतार मीणा, बहु-कार्य कार्मिक, सामान्य शाखा	37
33	संविधान का महत्व	निशांत मीणा, बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा	37
34	जीवन दर्शन	बाबू लाल मीणा, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी	38
35	सफलता	पूजा मीणा, बहु-कार्य कार्मिक, प्रशासन शाखा	39
36	चाइनीज बाम्बू	सुरेन्द्र मीणा, बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा	40
37	GeM-ई -मार्केट - खरीद की पुनर्कल्पना	राज कुमार चौधरी, कार्यालय अधीक्षक	41-42
38	ई-श्रम पोर्टल	करिश्मा सोनी, बहु-कार्य कार्मिक, हितलाभ शाखा	42
39	प्रभावी कर्मचारी	विवेक सिंघल, प्रवर श्रेणी लिपिक, वसूली शाखा	43
40	बाल श्रम : एक सामाजिक समस्या	अरूण कुमार शर्मा, निजी सहायक	44-45
41	बीती बात पुरानी, याद आए सारी कहानी	चन्द्र प्रकाश चौहान, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	46
42	प्रदूषण	शिवम वालिया, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	47-48
43	मेहनत	विकास जैन, शाखा प्रबंधक, शाखा कार्यालय गुलाबपुरा	49
44	माँ	दिनेश कुमार चौधरी, कार्यालय अधीक्षक	49
45	आत्म प्रेम क्यों महत्वपूर्ण है	हर्षिता मालवीय, बहु-कार्य कार्मिक, प्रशासन शाखा	50
46	वो औरत है साहब सब सह जाती है	युगवीर शर्मा, सहायक (वसूली शाखा)	51
47	कृत्रिम बुद्धिमता	भारतेंदु मुद्गल, प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा	52

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

डॉ. राजेन्द्र कुमार
महानिदेशक

संख्याः-ए-49/17/1/2016-रा.भा.
दिनांकः 23.08.2023

संदेश

यह अत्यन्त हर्ष एवं गौरव का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर अपनी विभागीय गृह पत्रिका **'मेवाड़ दर्पण'** का चतुर्थ अंक प्रकाशित कर रहा है। पत्रिका का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक सकारात्मक कदम है जो न केवल कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करेगा बल्कि उनमें लेखन क्षमता को भी विकसित करेगा।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर को मेवाड़ दर्पण के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ और आशा है कि भविष्य में भी पत्रिका प्रकाशित कर राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के दायित्व का निर्वहन किया जाएगा।

शुभेच्छु,

राजेन्द्र कुमार

(डॉ. राजेन्द्र कुमार)

श्री राजीव लाल
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
उदयपुर।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

टी.एल. यादेन
वित आयुक्त

सं. ए-49/17/2/2016-रा.भा.
दिनांक :

संदेश

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर अपनी विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **'मेवाड़ दर्पण'** के चतुर्थ अंक का प्रकाशन करने जा रहा है।

पत्रिका प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक मील के पत्थर के रुप में कार्य करेगा और क्षेत्र में कार्यरत कार्मिकों को राजभाषा हिंदी में दैनिक कार्यालयीन कार्य करने के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा। पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं ।

टी. एल. यादेन
(टी. एल. यादेन)

श्री राजीव लाल
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
उदयपुर।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

मनोज कुमार सिंह
मुख्य सतर्कता अधिकारी

अ.शा.पत्र सं: ए-49/17/1/2013-रा.भा.
दिनांक : 11/09/2023

संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर अपनी विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **'मेवाड़ दर्पण'** का चतुर्थ अंक का प्रकाशन कर रहा है।

पत्र-पत्रिकाएं ज्ञान के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्मिकों के भावों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। मेरा ऐसा विश्वास है कि **'मेवाड़ दर्पण'** के प्रकाशन से कार्मिकों को रचनात्मक प्रतिभा के विकास का अवसर मिलेगा और इससे निगम कार्यालयों में राजभाषा नीति के अनुपालन का उत्तरदायित्व सुनिश्चित होगा। आशा है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर का यह प्रयास अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल होगा।

मैं **'मेवाड़ दर्पण'** पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

(मनोज कुमार सिंह)

श्री राजीव लाल
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
उदयपुर।

कर्मचारी राज्य बीमा निगम
(श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार)
Employees' State Insurance Corporation
(Ministry of Labour & Employment, Govt. of India)
क.रा.बी.नि.
E.S.I.C.

सत्यमेव जयते

पंचदीप भवन, सी.आई.जी. मार्ग, नई दिल्ली-110 002
Panchdeep Bhawan, C.I.G. Marg, New Delhi-110 002
Tel. : 011-23604740
Website : www.esic.gov.in

रत्नेश कुमार गौतम
बीमा आयुक्त

संख्याः ए-49/17/3/2016-रा. भा.
दिनांकः

संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर अपनी विभागीय हिंदी गृह पत्रिका **'मेवाड़ दर्पण'** का चतुर्थ अंक प्रकाशित कर रहा है।

पत्रिका का प्रकाशन न केवल उस क्षेत्र की राजभाषा हिंदी के प्रति कर्मठता को दर्शाता है बल्कि उस क्षेत्र की विविध गतिविधियों, उपलब्धियों को पत्रिका के माध्यम से सभी के समक्ष परिलक्षित करता है। आशा है कि 'मेवाड़ दर्पण' का यह अंक सभी पाठकों को राजभाषा हिंदी के प्रति जागरुक करेगा एवं उनका ज्ञानवर्धन करेगा।

शुभकामनाओं सहित।

रत्नेश कुमार गौतम

(रत्नेश कुमार गौतम)

श्री राजीव लाल
उप निदेशक(प्रभारी)
उप क्षेत्रीय कार्यालय,
क.रा.बी.निगम,
उदयपुर।

संरक्षक की कलम से

उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर की हिंदी पत्रिका **"मेवाड़ दर्पण"** का चतुर्थ अंक आपके हाथों में सौंपते हुए गर्व एवं संतोष की अनुभूति हो रही है । दस वर्षों के लंबे अंतराल के पश्चात् यह प्रयास आप सभी को पसंद आएगा, ऐसी आशा है।

उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर 2009 में अस्तित्व में आया एवं तभी से निगम द्वारा सौंपे गये दायित्वों को भली प्रकार से निभा रहा है । साथ ही राजभाषा अधिनियम, 1963 व राजभाषा नियम, 1976 के अंतर्गत जारी अनुदेशों/निर्देशों की अनुपालना में भी उप क्षेत्रीय कार्यालय अग्रसर है । निज कार्य निज भाषा में एवं राज कार्य राजभाषा में सूक्ति को उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर समस्त ऊर्जा से चरितार्थ कर रहा है।

राष्ट्रीय स्तर पर निगम की सरकारी कार्यवाहियों में हिंदी की महत्ता परिलक्षित होती रही है। वैसे ही उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर एवं इसके अंतर्गत आने वाले सभी शाखा कार्यालयों में दैनिक कार्यवाहियों का निस्तारण हिंदी भाषा में श्रेष्ठतम स्तर पर किया जा रहा है जो कि सराहनीय है । भविष्य में भी उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर हिंदी भाषा को समर्पित अपने प्रयासों में यथासंभव योगदान जारी रखेगा ।

"मेवाड़ दर्पण" का यह चौथा अंक सुधी पाठकों को आनंदित करेगा एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार में मील का पत्थर साबित होगा ।

धन्यवाद ।

(राजीव लाल)
उप निदेशक (प्रभारी)

संपादकीय

"मेवाड़ दर्पण" पत्रिका का चतुर्थ अंक अपने नये कलेवर व साज-सज्जा के साथ आप सभी पाठकों के कर-कमलों में सौंपते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है। पत्रिका का नाम इस प्रदेश की संस्कृति व शौर्य का प्रतीक है । मेवाड़ की पावन धरती बप्पा रावल, महाराणा सांगा, महाराणा कुंभा, महाराणा उदयसिंह एवं महाराणा प्रताप आदि शासकों की कर्मस्थली रही है । मेवाड़ के शासकों का कला एवं साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। जिससे मेवाड़ की कला साहित्य एवं संस्कृति का भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण स्थान है। मेवाड़ के शासकों की वीरता, बलिदान एवं भील जनजातीय संस्कृति को मेवाड़ की धरती आज भी बयां कर रही है। यहाँ के कण-कण और पग-पग पर शासकों का बाहुबल, शौर्य, पराक्रम, त्याग, जनजातीय संस्कृति, साहित्य एवं कला के प्रमाण मिलते हैं। मेवाड़ क्षेत्र में खूबसूरत झीले, ऐतिहासिक स्थल, वन व वन्यजीव एवं भील जनजातीय समाज कार्य कुशलता से परिपूर्ण है।

भाषा, संप्रेषण और अभिव्यक्ति का माध्यम एवं संपर्क का साधन होने के साथ-साथ संस्कृति व संस्कार के संरक्षण, संवर्धन व संवहन का संसाधन भी है । मातृभाषा व्यक्ति विशेष की वैयक्तिक व पारिवारिक पृष्ठभूमि का संज्ञान कराती है, राष्ट्रभाषा समाज को स्वदेशी भाव-बोध व प्रेम से समन्वित कराते हुए वैश्विक धरातल पर राष्ट्रीय स्वाभिमान की विशिष्ट पहचान का पुख्ता इंतजाम करती है और संपर्क भाषा देश-काल-पात्र के बीच सेतु का निर्माण करती है तो राजभाषा शासन-प्रशासन में जनता-जनार्दन की पहुँच का प्रावधान कराती है। राजभाषा यानी राज-काज की भाषा, शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग की भाषा, जनता और सरकार की भाषा ।

किसी भी कार्यालय में किसी विचार को मूर्तरूप प्रदान करने के लिए उस कार्यालय के कार्यालय प्रमुख का महत्वपूर्ण योगदान होता है। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारे कार्यालय के उप निदेशक (प्रभारी) महोदय श्री राजीव लाल जी ने हमेशा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को प्रोत्साहन व मार्गदर्शन प्रदान किया है एवं उन्हीं के संरक्षण में आज **"मेवाड़ दर्पण"** का चतुर्थ अंक बड़े लंबे अंतराल के पश्चात प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि पत्रिका का यह अंक आप सभी पाठकों को पसंद आएगा एवं अपनी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से हमें अवश्य अवगत कराएं ताकि पत्रिका का आगामी अंक आपसे प्राप्त सुझावों के अनुरुप और भी अधिक परिष्कृत किया जा सके ।

(राम कृष्ण मीना)
सहायक निदेशक (प्रभारी राजभाषा)

अदृश्य सहारा

छोटे-छोटे बच्चे और एक बीमार पत्नी । रिश्तेदार में ऐसा कोई नहीं जो बुरे वक्त पर सहायता कर सके । पति सुदूर अमेरिका के अस्पताल में बीमार । महीने बीत गए लेकिन कोई पत्र नहीं। बहुत समय बाद एक पत्र मिला । अमेरिका के एक अस्पताल से लिखा गया था । 'बीमारी काबू से बाहर है, डॉक्टर ने ऑपरेशन करने की सलाह दी है । लगता है कुछ ही दिनों का मेहमान हूँ । उसके बाद तुम लोगों का क्या होगा, कुछ समझ नहीं आता । ईश्वर में विश्वास रखना, वह सबका रखवाला है ।"

पत्नी आँखों में आँसू लिए पत्र पढ़ती रही । बच्चे आँसू भरी आँखों से माँ की तरफ निहारते रहे। फिर बहुत सी चिट्ठियाँ उन्होंने लिखी, फिर विदेशी मोहर लगा एक लिफाफा मिला । लिखा था 'ईश्वर की कृपा से हालत सुधर रही है। लगता है मानो नया जन्म मिला है।" फिर कुछ दिनों बाद एक और पत्र आया। "तबीयत पहले से अच्छी है, चिंता की कोई बात नहीं है।" इस बार पत्र के साथ कुछ पैसे भी भेजे गए। पति की अच्छी खबर से घर में खुशी की लहर फैल गई। चिट्ठियाँ नियमित रुप से आती रहीं और पैसे भी पहुँचते रहे ।

एक बार चिट्ठी में लिखा था- "हाथ के ऑपरेशन के कारण अब स्वयं पत्र नहीं लिख पाता, इसलिए किसी की मदद से पत्र लिखवा लेता हूँ, आगे बताया कि धीरे-धीरे कारोबार का भी विस्तार कर रहा हूँ, शहर में एक जमीन देखी है, घर बनाने की योजना है ।" इस बार पूरे परिवार के बारे में, बच्चों के बारे में बहुत सारे प्रश्न थे । इतना अच्छा पत्र पहले कभी नहीं आया । परिवार में सभी को प्रसन्नता हुई। ऐसा लग रहा था मानो डूबती नाव को तिनके का सहारा मिल गया हो।

लगभग 4-5 वर्ष बीत गए । बच्चे बहुत याद करते हैं। पिता को देखने के लिए तरसते है । चिट्ठी में पिता द्वारा जो बातें बताई गई थी, उनका अक्षरशः पालन करते हैं। दीपक पूरे 13 वर्ष का हो गया है। 8वीं कक्षा में पहला स्थान प्राप्त किया है । मास्टर जी कहते है कि उसे छात्रवृत्ति मिलेगी । रेखा 18 वर्ष की होने वाली है । उसका ब्याह भी करना है।

चिट्ठी के जवाब में बहुत सारी बातें थी । लिखा था- "इस वर्ष तो नहीं, लेकिन अगले वर्ष रेखा के ब्याह में जरुर पहुँचूँगा । दहेज की चिंता मत करना । अच्छा सा वर ढूँढना ।"

वर की तलाश में ज्यादा हाथ-पैर नहीं मारने पढ़े । एक अच्छे घर का लड़का मिल गया । विवाह की तारीख तय हो गई । अमेरिका से पत्र आया कि वह शादी में समय से पहुँच रहा है। गहने-कपड़े सब वह साथ लाएगा । लेकिन विवाह में वह चाहकर भी पहुँच नहीं पाया । मजबूरी से भरा एक पत्र आया- "नया कारोबार जो शुरु किया है, उसमें कुछ समस्याएं आ रही हैं। ऐसी स्थिति में सब छोड़कर वह कैसे आ सकता है । हाँ गहने, कपड़े और पैसे भिजवा दिए हैं। वर-वधू के फोटो उसे अवश्य भेजें, वह प्रतीक्षा करेगा ।" खैर विवाह धूमधाम से हो गया । विवाह के फोटो भी भेज दिए गए ।

हर बार वादा करने पर भी घर आना संभव नहीं हो पाता । हर बार कुछ न कुछ समस्याएं आ जाती और उनका आना स्थगित हो जाता । बच्चों ने लिखा कि उनका घर आ पाना कठिन हो रहा है तो वे ही अमेरिका आने की सोच रहे हैं । कुछ वर्ष वहीं बिता लेंगे। उत्तर में केवल इतना ही था- "दीपक

जब तक अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर लेता तब तक कुछ नहीं हो सकता । समय निकालकर वह स्वयं घर आने की कोशिश करेगा । तुब सबकी बहुत याद आती है । लेकिन विवशता के लिए क्या किया जाए?"

फिर, वह दिन भी आ गया जब दीपक ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली । अच्छी नौकरी की तलाश शुरु हुई, लेकिन पिता के अभी भी घर आने की कोई संभावना नहीं थी तो उसने लिखा– "माँ बीमार रहती है । एक बार, अंतिम बार देखना भर चाहती है"।

उत्तर में विस्तृत पत्र मिला और इलाज के लिए पैसे भी । परंतु इस बार दीपक ने अमेरिका जाने का मन बना लिया और अकस्मात पहुँचकर पिताजी को चौंकाने की योजना बनाई । टिकट खरीद लिया । पासपोर्ट, वीजा भी बन गया और एक दिन दिल्ली से वह विमान से रवाना भी हो गया ।

अमेरिका के हवाई अड्डे पर उतरकर वह सीधे उस पते पर गया, जो पत्र में दिया हुआ था । परंतु वहाँ ताला लगा हुआ था । हाँ, उसके पिता की धुँधली नेमप्लेट अवश्य लगी थी। आस-पास पूछताछ की तो पता चला कि एक वृद्ध भारतीय अप्रवासी वहाँ रहते हैं । रात को देर से दफ्तर से लौटते हैं। वह बाहर रखी बेंच पर ही प्रतीक्षा करता रहा । रात को एक बूढ़ा आदमी ताला खोलने लगा तो देखा एक युवक सामने बैठा ऊँघ रहा था । उसका नाम पूछा तो उसे अपनी बाँहों में भर लिया । बड़े उत्साह से स्वागत किया । भोजन के बाद वे उसे अपने कमरे में ले गए । दीवार की ओर इशारा किया, एक नन्हा बच्चा माँ की गोद में बैठा हुआ है। "यह किसका फोटो है? " युवक ने गौर से देखा और कहा– "मेरा।" वृद्ध इस बार कुछ खुशी से खिलखिलाते हुए बोले– "मेरे बच्चे! तुम इतने बड़े हो गए हो । इतने साल बीत गए । जैसे मानो कल की ही बात है।" उन्होंने कहा– "तुम शायद मुझे नहीं जानते हो, मैं तुम्हारे पिता का जिगरी मित्र हूँ । बहुत लंबे समय तक हम साथ रहे, दो मित्रों की तरह नहीं, सगे भाइयों की तरह। उसी ने मुझे हिंदुस्तान से यहाँ बुलाया और बड़ी लगन से सारा काम सिखाया ।" साथ-साथ साझे में, हमने यह कारोबार शुरु किया । अमेरिका की यह सबसे बड़ी फर्म है । यह सभी उसी की बदौलत है । कहते-कहते वे सिसक गए।

कुछ क्षणों के मौन के बाद खोए हुए से बोले– "देखो बेटे, तिनकों के सहारे तो हर कोई जी लेता है। लेकिन कभी-कभी हम तिनकों के साए मात्र के आसरे, भँवर से निकलकर, किनारे पर आ लगते हैं । जरा सोचो बेटे! वे खाँसे– "तुम्हारे पिता की मृत्यु आज से पंद्रह-बीस वर्ष पहले हो जाती, तो क्या होता? तुम अनाथ हो जाते । तुम्हारी माँ घुट-घुटकर कब की मर चुकी होती । तुम इतने हौसले से पढ़ नहीं पाते। जहाँ तुम आज हो, वहाँ तक नहीं पहुँच पाते ।"

उन्होंने बोला– "हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने-कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे... ।" उनका गला भर आया– "तुम्हारे पिता तो तब ही गुजर गए थे बेटे । अपने साझे कारोबार से, उनके हिस्से के पैसे नियमित रुप से भेजता रहा । कितने वर्षों से मैं इसी दिन के इंतजार में था। अब तुम बड़े हो गए हो । अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बटाओ । मेरा वचन पूरा हो गया जो मैंने उसे मरते समय दिया था ।" उनका गला भर आया। वे दीवार पर टँगे एक धुँधले से चित्र को न जाने क्या-क्या सोचते हुए देखते रहे ।

कमलेश कुमार मीना

सहायक निदेशक

राजस्थान का श्रीअन्न

भारत की पहल पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा वर्ष 2023 को मोटे अनाजों का वर्ष घोषित किया गया है। माननीय प्रधानमंत्री जी ने मोटे अनाजों को श्रीअन्न से संबोधित किया है। इनमें बाजरा, ज्वार, रागी जैसे प्रमुख अनाज शामिल हैं।

देश में राजस्थान बाजरे के उत्पादन में एकाधिकार रखता है। बारिश के दिनों को राजस्थान में चौमासा (चार महीने) कहा जाता है। इन महीनों के शुरुआती दिनों में अर्थात् मई-जून के समय यहां की एक प्रमुख फसल बाजरा को खेतों में बोया जाता है। इस फसल को पकने में कम समय लगता है, साथ ही कम पानी की आवश्यकता होती है। इसके अलावा यह फसल जैविक खेती को भी बढ़ावा देती है क्योंकि इसमें कृत्रिम खाद जैसे यूरिया, डीएपी व अन्य कीटनाशकों का उपयोग नहीं किया जाता है। इस फसल में गाय के गोबर को खाद के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

राजस्थान के प्रमुख त्योहारों गणगौर, आखातीज एवं हरियाली अमावस में इस अनाज का बहुत महत्व है। मारवाड़ में रीति-रिवाजों के दौरान विभिन्न रस्मों के अंतर्गत बाजरे का उपयोग किया जाता है। विवाह के समय सामेला, कामन गीत, तोरण मारने की रस्मों के दौरान बाजरे का खास महत्व है। मृत्यु की रस्म पथवारी पूजन के दौरान भी बाजरे का उपयोग किया जाता है। इस कारण बाजरे को श्रीअन्न की संज्ञा देना सार्थक है। राजस्थान के पश्चिमी क्षेत्र मारवाड़ का प्रमुख खाद्यान्न बाजरा है। इसके आटे से बनी खीर बहुत स्वादिष्ट होती है। बाजरे की रोटी का चूरमा करके उसमें दूध डालकर खाने से जिंदगी जन्नत सी महसूस होती है। बाजरे के आटे से बनी राबड़ी पूरे मारवाड़ में प्रसिद्ध है। बाजरे को अंकुरित करके खाने से हड्डियाँ मजबूत होती है। इसके उपयोग से कैंसर, मधुमेह व हृदय संबंधी रोगों से बचाव किया जा सकता है।

भारत सरकार द्वारा इन दिनों बाजरे को बढ़ावा देने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं जैसे पुलिस, सेना की मेसों में बाजरे से बने उत्पादों का उपयोग किया जाएगा। केंद्र की प्रमुख फ्लैगशिप योजना जैसे वॉकल फॉर लॉकल के तहत भी इन मोटे अनाजों को प्राथमिकता दी जा रही है । इसके अलावा केंद्र सरकार किसानों की आय को 2025 तक दोगुना करने के लिए प्रयासरत है । सरकार व अन्य प्रमुख संस्थाओं जैसे एपीडा, आईसीएआर को इस राजस्थान के श्रीअन्न का वैश्वीकरण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए। एपीडा जैसी संस्था को खाद्य प्रसंस्करण के माध्यम से बाजरे की नमकीन, दलिया, केक आदि तैयार करने होंगे। डिजिटल मीडिया, एआई तकनीक, मशीन लर्निंग का योगदान श्रीअन्न के विकास में महत्वपूर्ण साबित होंगे। सरकार को जन भागीदारी सुनिश्चित करते हुए लोगों में मोटे अनाजों के प्रति जागरूकता पैदा करनी होगी।

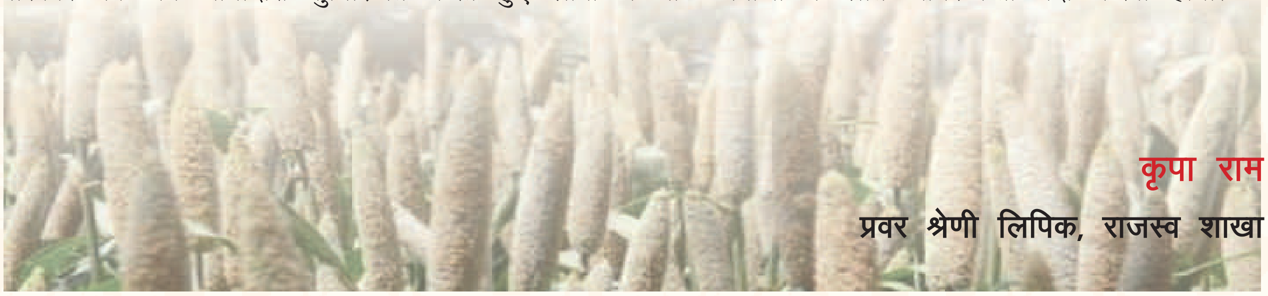

कृपा राम
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

प्रेरक प्रसंग : यशस्वी जायसवाल का संघर्ष : कभी गोलगप्पे बेचे थे, अब क्रिकेट में भारत का नाम रोशन करने को तैयार यह सुपरस्टार

कभी आपको अपना सपना जीने के लिए कड़ी मेहनत करनी होती है और विपरीत परिस्थितियों से लड़कर उसे हासिल करना होता है। भारतीय अंडर-19 टीम और आईपीएल में राजस्थान रॉयल्स के ओपनर क्रिकेटर यशस्वी जायसवाल की कहानी कुछ ऐसी ही है। यशस्वी जायसवाल एक ऐसा नाम है जो धैर्य, दृढ़ संकल्प और कड़ी मेहनत का पर्याय बन गया है। वह मुंबई के एक क्रिकेटर हैं जिन्होंने 2020 में तब सुर्खियां बटोरीं जब वह लिस्ट ए मैच में दोहरा शतक बनाने वाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी बने।

यशस्वी के पिता उत्तर प्रदेश के भदोही में एक छोटी सी दुकान संभालते हैं। यशस्वी अपने घर के छोटे बेटे हैं। वह क्रिकेट में अपना भविष्य बनाने के लिए मुंबई पहुंच गए। उनके पिता ने कोई आपत्ति नहीं उठाई क्योंकि परिवार को पालने के लिए उनके पास पर्याप्त पैसे नहीं थे। यशस्वी के एक रिश्तेदार संतोष का घर मुंबई के वर्ली में जरूर है, लेकिन वह इतना बड़ा नहीं कि कोई अन्य व्यक्ति उसमें रह सके । संतोष मुस्लिम यूनाइटेड क्लब के मैनेजर थे और उन्होंने वहाँ के मालिक से गुजारिश करके यशस्वी के रूकने की व्यवस्था करा दी । यशस्वी को वहां ग्राउंड्समैन के साथ टेंट में रहना पड़ता था । यशस्वी ने बताया, 'यह (टेंट में रहने) तब की बात है जब मुझे कलबादेवी में डेयरी छोड़ने के लिए कहा गया । पूरे दिन क्रिकेट खेलने के बाद मैं थककर सोने चला जाता था । एक दिन उन्होंने मेरा सामान उठाकर बाहर फेंक दिया और कहा कि मैं कुछ नहीं करता हूँ । मैं उनकी मदद नहीं करता, केवल सोने के लिए आता हूँ । तीन सालों के लिए यह टेंट मेरा घर रहा ।"

यशस्वी की एक और बड़ी बात यह है कि उन्होंने इतने दर्द सिर्फ इसलिए सहे ताकि उनके संघर्ष की कहानी कभी भदोही (गृहनगर) तक न पहुंचे, जिससे उनका क्रिकेट करियर न खत्म हो जाए । कुछ मौकों पर यशस्वी के पिता पैसे भेजते थे, जो गुजारे के लिए पर्याप्त नहीं होते थे । यशस्वी अपना पेट पालने के लिए आजाद मैदान में राम लीला के दौरान पानी-पूरी (गोलगप्पे) बेचा करते थे और फल बेचने में मदद करते थे । मगर ऐसे भी दिन थे, जब उन्हें खाली पेट सोना पड़ता था क्योंकि जिन ग्राउंड्समैन के साथ वह रहते थे, वह आपस में लड़ाई करते थे । वह लोग खाना नहीं पकाते थे तो यशस्वी को अपनी भूख मारकर सोना पड़ता था । यशस्वी कहते हैं, 'राम लीला के दौरान मैं अच्छा कमा लेता था । मैं प्रार्थना करता था कि कोई टीम का साथी पानी-पूरी खाने वहां न आ जाए । कभी वे आ जाया करते थे तो मुझे उन्हें पानी-पूरे देने में बड़ा बुरा महसूस होता था ।' यशस्वी कुछ पैसे कमाने के लिए हमेशा अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते रहे । यशस्वी ने याद किया, 'मैंने हमेशा देखा कि मेरी उम्र के लड़के खाना लेकर आते थे या फिर उनके माता-पिता बड़े लंच बॉक्स लेकर आ रहे हैं । वहीं मेरे साथ मामला ऐसा था- खाना खुद बनाओ, खुद खाओ । नाश्ता नहीं था, तो किसी से गुजारिश करनी होती थी कि वह अपने पैसों से मुझे नाश्ता करा दे । दिन और रात का खाना टेंट में होता था, जहां यशस्वी की जिम्मेदारी रोटी बनाने की थी । हर रात कैंडल नाइट डिनर होता था क्योंकि वहां बिजली नहीं होती थी।' 17 वर्षीय यशस्वी ने आगे कहा, 'दिन तो सही थे क्योंकि वह क्रिकेट खेलने और काम करने में व्यस्त थे, लेकिन रातें लंबी हुआ करती थी । रातों को समय बिताना मुश्किल होता था । मुंबई अंडर-19 कोच सतीश सामंत यशस्वी के खेल से बहुत प्रभावित हैं और उन्हें भरोसा है कि एक दिन वह मुंबई के सबसे सफल क्रिकेटरों में से एक कहलाएगा । यशस्वी के बारे में बात करते समय सतीश ने कहा कि उनके अंडर-19 टीम में चयन का श्रेय जायसवाल के कोच ज्वाला सिंह को जाता है । 2011 में अपनी क्रिकेट एकेडमी की शुरुआत

करने वाले ज्वाला सिंह भी क्रिकेटर बनने के लिए मुंबई आए थे, लेकिन वह सफल नहीं हुए । अब ज्वाला युवाओं का सपना पूरा करने में उनकी मदद कर रहे हैं । भदोही के यशस्वी को परेशानी में देख ज्वाला ने उसकी काफी मदद की ।

उनकी कड़ी मेहनत का भुगतान तब हुआ जब उन्हें 2018 में मुंबई अंडर -19 टीम के लिए खेलने के लिए चुना गया । इसके बाद उन्होंने 2020 में अंडर -19 विश्व कप में भारत का प्रतिनिधित्व किया, जहाँ वे अपनी टीम के लिए अग्रणी रन-स्कोरर थे। अभी हाल ही में उन्होंने भारतीय टीम में जगह बनाकर अतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का प्रतिनिधित्व किया ।

यशस्वी की कहानी इस बात का प्रमाण है कि कड़ी मेहनत और दृढ़ संकल्प किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं । वह कई युवाओं के लिए एक प्रेरणा हैं जो जीवन में कुछ बड़ा करने का सपना देखते हैं । उनकी कहानी हमें सिखाती है कि सफलता हमें थाली में परोस कर नहीं दी जाती है, बल्कि यह एक ऐसी चीज है जिसके लिए हमें कड़ी मेहनत करनी चाहिए और अपने प्रयासों को और दृढ़ता से करना चाहिए।

अशोक कुमार बाटड़
सहायक, रोकड़ शाखा

ध्यान (Meditation) कविता

ध्यान के आलोक में,
खो जाती है हर चिंता की अफवाह,
धीरे से साँसों को लेते हुए,
मिटती है सारी परेशानियों की ज्वाला।

चिंताओं से छुटकारा पाने के लिए,
ध्यान बन जाता है एक रास्ता,
जहाँ शांति और सुकून मिलता है,
वहाँ जीवन का सही आनंद पाता है।

ध्यान की एक स्वस्थ आदत बनाने से,
हम जीवन के तनावों से छुटकारा पाते हैं,
अपने मन और शरीर को हमेशा स्वस्थ रखते हैं,
और इंसानियत के सबसे बड़े रहस्य को समझ पाते हैं।

तो आज से ही बनाएं ध्यान को एक अभ्यास,
और जीवन के सभी संघर्षों से निपटना सीखें,
चिंताओं और संकटों को दूर करें,
और ध्यान के सहारे शांति के पात्र बन जाएं।

हर्षित सैनी
प्रवर श्रेणी लिपिक, रोकड़ शाखा

सामाजिक सुरक्षा एवं सरकारी नीतियाँ

सामाजिक सुरक्षा एक व्यापक शब्द है जो समाज के लोगों को उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं से संबंधित जोखिमों से बचाने और उन्हें सुरक्षित रखने के लिए उन्हें सहायता देने की एक प्रक्रिया है। सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत विभिन्न सुविधाएं शामिल होती हैं जैसे कि स्वास्थ्य सुरक्षा, जीवन बीमा, विधवा पेंशन योजना, सेवाएं और अन्य विभिन्न सरकारी योजनाएं शामिल होती हैं।

इन सुविधाओं का उद्देश्य उन लोगों की मदद करना है जो आर्थिक रूप से कमजोर होते हैं और सामाजिक रूप से वंचित होते हैं। ये सुविधाएं उन लोगों की मदद करती हैं जो नौकरी या अन्य स्वरोजगार की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं या उनके पास अपने व्यवसाय के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन नहीं होते हैं।

सामाजिक सुरक्षा अक्सर सार्वजनिक कल्याण कार्यक्रमों, समाज सेवा योजनाओं, सरकारी योजनाओं और निजी संगठनों के माध्यम से प्रदान की जाती है। सामाजिक सुरक्षा से संबंधित विभिन्न नीतियां निम्नलिखित हैं:

राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा योजनाएं:-

भारत सरकार द्वारा लागू की गई निम्न योजनाएं प्रमुख हैं - प्रधानमंत्री जन धन योजना, राष्ट्रीय स्वास्थ्य संरक्षण योजना और प्रधानमंत्री आवास योजना। इन योजनाओं का मुख्य उद्देश्य गरीब और दुर्बल लोगों को विभिन्न सुविधाओं तथा आवश्यक वस्तुओं के लिए समर्थ बनाना है।

श्रम नीतियां:-

सरकार द्वारा लागू की जाने वाली श्रम नीतियों में कामगारों के हितों का ध्यान रखा जाता है। श्रम कानून, श्रम सुविधाएं एवं कर्मचारी रक्षा इस प्रकार की नीतियों में शामिल है ।

क.रा.बी.नि.:-

क.रा.बी.नि. भारत में सामाजिक सुरक्षा हेतु प्रतिबद्ध है । यह श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत है । ESIC यानी "Employees' State Insurance Corporation" एक भारतीय सरकारी संगठन है जिसके कार्यालय भारत के अधिकांश राज्यों में स्थापित है। यह संगठन भारत के दुर्घटना, बीमारी और असुविधाओं से पीड़ित कर्मचारियों के लिए स्वास्थ्य सुरक्षा योजनाएं प्रदान करता है ।

यह संगठन भारतीय श्रम आधिकारिक अधिनियम, 1948 के तहत स्थापित किया गया था। क.रा.बी.नि. के तहत दुर्घटनाओं और बीमारियों के मामलों में संबंधित कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुरक्षा योजनाएं जैसे चिकित्सा, औषधि, जनशक्ति योजनाएं, अस्पतालों में उपचार और वित्तीय सहायता जैसी सुविधाएं प्रदान की जाती हैं । क.रा.बी.नि. का उद्देश्य यह है कि सभी रेट्रो कर्मचारी और असंगठित क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों को स्वास्थ्य सुरक्षा योजनाओं से लाभ प्राप्त हो सकें ।

अंकुश कुमार चतुर्वेदी
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

घर की खिड़कियों से

याद आते हैं वो लम्हें, जब झांकता हूँ नीचे
घर की इन खिड़कियों से ।
कि जैसे एक बड़ा बाजार लगा करता था ,
कहीं चूड़ियों के ठेले पे, कहीं खिलौनों की दुकान पे,
कि हर सामान, बड़ी शिद्दत से बिका करता था ।
अक्सर, औरतें मोलभाव किया करती थीं । तो कहीं पानीपुरी बिका करती थी ।
बच्चों की गजब भीड़ उमड़ा करती थी ।
यकीन मानो, कालू हलवाई की मिठाइयां हाथो-हाथ बिका करती थी।
अब न कोई रीति है, न है कोई रिवाज ।
अजीब सा सन्नाटा पसरा है,
ना है पहले जैसी बात ।

खबर है कि कुछ दिन ये, वक्त जरूर सतायेगा ।
जो चल रहा बुरा ये वक्त भी बदल जायेगा
छाने दो इन अंधेरो को पता है मुझे,
कि वो उजला सवेरा जरूर आएगा।
एक दिन फिर से देखूंगा,
घर की इन्ही खिड़कियों से
वो बीता कल, दुबारा मुस्कुरायेगा।
और संभल जा बंदे समय के साथ
वरना जो चला गया वो फिर से लौट नहीं पायेगा।

श्याम सुंदर महावर
बहु-कार्य कार्मिक, समन्वय शाखा

ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय ।
औरन को सीतल करै, आपहु सीतल होय ।।

टीचर जो हूँ

भविष्य में सफल जीवन की
मजबूत नींव, आज तैयार करती हूँ मैं,
अधखिले, अनखिले सुकुमार फूलों के मन में,
आनंददायी रसों को, आज, भरती हूँ मैं ।

मेरी ओर, एकटक, आशा भरी नजरों से देखते
छोटे-छोटे मासूमों की भाषा समझती हूँ मैं,
बीते हुए अनुभवों, कीर्तिमानों को
अपने नन्हें-मुन्ने साथियों से साझा करती हूँ मैं।

सारगर्भित सवालों के बदले, उनके निष्कपट
तर्कों, अतर्कों, कुतर्कों को भी ज्ञान मानती हूँ मैं,
बरसों से गलाकाट कालचक्रों में पिस गई,
पीढ़ी दर पीढ़ी का यह पहला पुष्प, अंकुर है, जानती हूँ मैं।

गरीबी, निराशा, घटाटोप निजी जीवन के अंधेरों के बीच
एक मात्र आशा की किरण बन जाती हूँ मैं,
उनकी मनरुपी कोरी सफेद कॉपी पर
संपूर्ण जगत का ज्ञान देने वाली स्त्रोत पेंसिल बन जाती हूँ मैं ।

ज्ञान-चक्षुओं को खोल, शांति से ज्ञान शब्द बोल
अंधेरों से उजालों के पदार्पण के औजार ढलती हूँ मैं,
नन्हीं-नन्हीं भारी आशाओं एवं उत्कंठाओं को
टीचर जो हूँ, सहर्ष स्वीकार करती हूँ मैं ।

श्रीमती निर्मला
मेंटोर, दिल्ली नगर निगम, शिक्षा विभाग

"हँसना एक कारगर दवा"

"हँसता हुआ चेहरा आपकी शान बढ़ाता है, और

हँस कर किया हुआ काम आपकी पहचान बढ़ाता हैं।"

जीवन में कई उतार-चढ़ाव आते हैं । हम सभी के जीवन में चुनौतियाँ और दु:ख आए हैं, लेकिन हम सभी ने उन पर भी विजय प्राप्त की है । किसी भी परेशानी पर काबू पाने के लिए एक मुस्कान सबसे प्रभावी तरीका है । हँसी को लंबे समय से दर्द, तनाव और संघर्ष का सबसे अच्छा समाधान माना गया है । एक अच्छी हँसी से ज्यादा जल्दी किसी के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को कुछ भी बहाल नहीं कर सकता है । यह आपको दूसरों से जुड़ने की अनुमति देकर एकाग्रता में भी मदद करता है । हँसी में व्यक्ति के दिमाग और शरीर को ठीक करने की क्षमता होती है । अगर आप खुश हैं तो आपका दिमाग उसी के अनुसार काम करता है और आपके चेहरे के भाव उसी के अनुसार बदलते हैं । एक मुस्कान हर दर्द को दूर करने का अचूक हथियार है । यदि आप प्रसन्न रहते हैं, तो आप अपनी सभी समस्याओं को दबा सकते हैं और उन्हें आसानी से दूर कर सकते हैं । हँसी में रिश्ते को मजबूत करने की क्षमता होती है । जब भी लड़ाई हो तो बस एक प्यारी सी मुस्कान ले जाना, और यह आपके आसपास सब कुछ बदल देती है।

"हँसी से डर को मिटाया जा सकता है।" -जॉर्ज आर. आर. मार्टिन

हँसी आपके आस-पास के माहौल को बदलने की क्षमता रखती है । यह हमारे दिमाग को प्रभावित करती है और साथ ही एक स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने में मदद करती है । जब कोई व्यक्ति दिल खोलकर हँसता है, तो प्रतिरक्षा प्रणाली रोगों से लड़ने की क्षमता को मजबूत करती है और शरीर की प्रतिरोधक शक्ति में सुधार करती है । यह तनाव हार्मोन को कम करने, मांसपेशियों की सक्रियता और शरीर के अंदर रक्त के प्रवाह को बढ़ाने में मदद करती है । धमनियों का सामान्य कामकाज किसी भी अनदेखी स्वास्थ्य जटिलताओं से भी बचाता है । इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि हँसी मानव शारीरिक क्रिया का एक आवश्यक पहलू और एक प्यारा अनुभव दोनों है।

"शांति हमेशा मुस्कराहट से होती है। वह व्यक्ति जिसके सामने आप कभी मुस्कुराना नहीं चाहते, उसके सामने एक बार मुस्कुराकर के देखिये,

शांति की शुरुआत वहीं से होगी। "

कृतिका गौतम,
बहु-कार्य कार्मिक, रोकड़ शाखा

तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियहि न पान।
कहि रहीम पर काज हित, संपति सँचहि सुजान

कार्यालय में राजनीति से बचने के उपाय

कार्यालय में राजनीति उन सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है जिसका कर्मचारी को आमतौर पर सामना करना ही पड़ता है । कार्यालय की राजनीति किसी परजीवी की तरह आपके उत्पादक समय और ऊर्जा पर बुरा असर डालती है । कर्मचारी और नियोक्ता दोनों के सचेत प्रयासों के बावजूद कार्यालय की राजनीति का खतरा हर किसी की उत्पादकता कम करने में सक्षम है । भले ही वह एक अरब डॉलर की बहुराष्ट्रीय कंपनी हो या एक छोटा स्टार्ट-अप हो, कार्यालय की राजनीति किसी भी संगठन को नहीं छोड़ती है । ऐसे मौकों पर कर्मचारी को कार्य-जीवन संतुलन बनाना बहुत कठिन लगने लगता है । अन्य कर्मचारियों के साथ शीत युद्ध और टकराव आपके काम में हस्तक्षेप कर सकता है । कार्यालयों में होने वाली राजनीति से बचने के लिए निम्नलिखित कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान रखने योग्य हैं जिससे आपकी कार्य कुशलता प्रभावित न हो और आप अपने काम पर ध्यान केंद्रित करते हुए एक अच्छा प्रदर्शन कर सकें -

1. स्थिति का विश्लेषण करें-

जब आपको अपने कार्यालय में राजनीति के हावी होने का अहसास हो तो खुद को इसमें शामिल न करें । इससे पहले कि आप इसके प्रभाव में आकर किसी को दोषी करार दें, सर्वप्रथम संपूर्ण स्थिति का विश्लेषण करें । आपकी प्रतिक्रिया से भविष्य में होने वाले परिणाम को ध्यान में रखते हुए उचित समाधान निकालने का प्रयास करें । राजनीति में खुद शामिल होने से आपका निजी जीवन प्रभावित हो सकता है तथा आपके सामने काम का ढेर लगने की भी संभावना बढ़ जाती है । बाद में यही आपके और आपके नियोक्ता के बीच झड़पों का कारण बन सकता है । इसीलिए ऐसी स्थिति में पड़ने से बेहतर शांत रहकर स्थिति का विश्लेषण करें एवं बिना किसी की भावनाओं को नुकसान पहुंचाते हुए इससे निकलने का प्रयास करें ।

2. चतुर सहकर्मियों से सावधान रहें-

चतुर सहकर्मी इसे एक खेल मानते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि कार्यालय की राजनीति आसानी से खत्म नहीं हो । उन्हें इस खेल में एक बलि के बकरे की जरूरत होती है जिस पर दोष डाला जा सके। किसी चहेते को बचाने के लिए वे आपको भी बलि का बकरा बना सकते हैं । इसलिए ऐसे सहकर्मी या सहयोगियों के समूह से सावधान रहें जो कार्यालय में राजनीति के खेल को चलाने में गर्व महसूस करते हैं एवं उनके इस घिनौने खेल का हिस्सा बनने के बजाय इसका विरोध करें । यह आपके हाथ में है कि आप कैसे अपने निजी और कामकाजी जीवन के बीच संतुलन बनाए रखते हैं । अपना काम समय पर करने के लिए समर्पित रहें और अपनी समय सीमा निर्धारित करें । आपका काम ही आपके व्यक्तित्व और ईमानदारी का आईना होगा । घर में रहकर कार्यालय के झड़पों की वजह से हताश न हों और अपने परिवार के साथ गुणवत्ता का समय बिताएं ।

3. तटस्थ दृष्टिकोण बनाए रखें-

जब कार्यालय की राजनीति में कोई घसीटा जा रहा होता है तब आपके सहयोगी आपको पक्ष लेने के लिए प्रेरित करते हैं । ऐसी स्थिति में बिना दूसरे पक्ष की सुने किसी का भी पक्ष न लें । जब तक आप पूरी स्थिति से अवगत न हों, एक तटस्थ स्टैंड बनाए रखें । प्रत्येक व्यक्ति संगठन में एक प्रासंगिकता रखता है । जब आप संगठन में दूसरे की जगह एक को चुनते हैं तो दूसरा इसे विरोध या असहमति के तौर पर देखता हैं जिससे आपके कामकाजी संबंधों में बुरा असर पड़ता है । आपके सहकर्मियों के साथ खराब संबंध आपके कार्यप्रवाह पर भी बुरा असर डालेंगे । तटस्थ दृष्टिकोण बनाए रखने से आपको अपने सहयोगियों के साथ स्वस्थ कामकाजी और व्यक्तिगत संबंध बनाए रखने में मदद मिलेगी ।

4. मामले पर व्यक्तिगत रूप से बात करें-

मामले पर व्यक्तिगत रूप से बात करना कार्यालय की राजनीति से निपटने का सबसे अच्छा समाधान नहीं हो सकता है लेकिन जब स्थिति नियंत्रण से बाहर निकलने लगती है तब यह तरीका मददगार होता है । अपने उन सहयोगियों से बात करें, जिनकी आपके बारे में अनकही या गलत बातें सुनने से गलत धारणा बनी है। उन्हें आपके व्यक्तित्व के बारे में उन नकारात्मक धारणाओं को बाहर निकालने का समय दें जिनकी वजह से आपके बीच दरार पैदा हो रही है । उनकी बातों को सुनें और उनके साथ अपनी भी बातें साझा करें । इस तरह आप बहुत से मतभेदों को दूर कर सकते हैं ।

5. सभी के लिए अच्छा माहौल बनाएं-

कार्यालय की राजनीति पूरे संगठन का माहौल खराब कर सकती है । यहां तक कि अगर आप ऐसी स्थिति से बाहर हैं तो भी यह कार्यालय के अंदर तनावपूर्ण माहौल पैदा कर सकती है । इसकी नकारात्मकता संक्रामक है । जब आप नकारात्मक माहौल महसूस करने लगें तो कार्यस्थल पर संयमपूर्ण वातावरण बनाए रखने के लिए अपने कार्यालय के साथियों या अधिकारियों से इस विषय पर बात करें । कर्मचारियों के बौद्धिक विकास के लिए सकारात्मक वातावरण काफी प्रेरणादायक होता है । यह एक सकारात्मक दृष्टिकोण भी पैदा करता है, जो स्वस्थ कार्य-जीवन संतुलन के लिए आवश्यक तत्व है ।

राजीव रंजन, सहायक
समन्वय शाखा

सकारात्मक दृष्टिकोण का महत्व

एक आदमी था जो मेले में गुब्बारे बेचकर अपनी जीविका चलाता था । उसके पास लाल, पीले, नीले और हरे सहित कई अलग-अलग रंगों के गुब्बारे थे । जब भी कारोबार मंदा होता, वह हीलियम से भरे गुब्बारे को हवा में छोड़ देता । जब बच्चों ने गुब्बारे को ऊपर जाते देखा तो वे सभी एक चाहते थे । वे उसके पास आते, एक गुब्बारा खरीदते और उसकी बिक्री बढ़ जाती । पूरे दिन, जब भी बिक्री धीमी होती थी, वह एक गुब्बारा छोड़ना जारी रखता था । एक दिन गुब्बारे वाले को लगा कि कोई उसके जैकेट को खींच रहा है। वह मुड़ा और एक छोटे लड़के ने पूछा, "यदि आप एक काला गुब्बारा छोड़ते है, तो क्या वह भी उड़ जाएगा? लड़के की चिंता से द्रवित होकर आदमी ने धीरे से उत्तर दिया, बेटा, यह गुब्बारे का रंग नहीं है, यह तो गुब्बारे के अंदर है जो इसे ऊपर की ओर ले जाता है।"

यही सिद्धांत हमारे जीवन पर भी लागू होता है: यह मायने रखता है कि हमारे अंदर क्या है जो हमें ऊपर की ओर ले जाता है वह हमारा दृष्टिकोण है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के विलियम जेम्स ने कहा, "मेरी पीढ़ी की सबसे बड़ी खोज यह है कि मनुष्य अपने मन के दृष्टिकोण को बदलकर अपने जीवन को बदल सकता है।"

हम में से ज्यादातर लोगों ने सकारात्मक सोच की ताकत के बारे में सुना होगा लेकिन बहुत कम लोगों ने नकारात्मक सोच की ताकत के बारे में सुना होगा। वे दोनों बहुत शक्तिशाली हैं लेकिन हमें बिल्कुल विपरीत दिशाओं में ले जाते हैं। जिस तरह सकारात्मक सोच लोगों को नई ऊंचाईयां हासिल करने की ताकत देती है, उसी तरह नकारात्मक सोच लोगों को आत्म-विनाश की ओर ले जाती है।

मोहित दायमा
बहु-कार्य कार्मिक, वित्त एवं लेखा शाखा

मेवाड़ केसरी

मेवाड़ की था वह आन, बान व शान,
राजस्थान का उसने बढ़ाया बहुत मान ।
निकलता था वह जब नीले घोड़े पर होके सवार,
शत्रु जान जाते थे निकट आ रहा है कोई बड़ा तूफान ।
जिसने स्वाभिमान के लिए राजसुख भी था छोड़ा,
जाकर जंगलों में कंद-मूल की ओर था अपना मुख मोड़ा ।
जिसकी मृत्यु पर स्वयं अकबर भी था रोया,
यह कहकर कि आज धरती ने है एक वीर को खोया ।
जिसके घोड़े तक का इतिहास में ताप है,
वह हिंदुआ सूरज, मेवाड़ केसरी, वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप है ।

रोहित गुप्ता
प्रवर श्रेणी लिपिक, हितलाभ शाखा

ईमानदारी (शब्द नहीं– सोच है)

भटक गए है कुछ लोग ईमानदारी की राह से,
बस उन्हीं राहों पर उनको वापिस लाना है ।
आएँगे अगर साथ सभी,
सभी ने मिलकर हाथ बढ़ाना है।
ये भ्रष्टाचारी रूपी दीमक को,
अब नहीं तो फिर कब अंकुश लगाना है ।
मानता हूँ लगेगा समय इसमें,
बस अब समय रहते कदम बढ़ाना है ।
क्रांतिकारी ने तो कलम,
भ्रष्टाचार के खिलाफ उठाई है ।
रोक लेंगे चाहे भ्रष्टाचारी साँसें मेरी,
माना के कलम को भी रोक पाएंगे ।
मेरे लिखे हर शब्द जो पढ़े लोगों ने,
उनकी सोच को कैसे मिटाएंगे ।
ईमानदारी सिर्फ शब्द नहीं सोच है,
बस इस पे चलते जाना है ।
भ्रष्टाचार है एक अदृश्य राक्षस,
इसी सोच से इसे मिटाना है ।
भ्रष्टाचार मुक्त है भारत,
ये दुनिया को बतलाना है ।
भ्रष्टाचार मुक्त है भारत,
ये दुनिया को बतलाना है ।

आशुतोष शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

"राणा जी का उदयपुर"

भारत के राजस्थान का उदयपुर एक बहुत विख्यात और बड़ा शहर है । उदयपुर में कई सारी झीलें हैं जिस वजह से इसे "सिटी ऑफ लेक्स" भी कहा जाता है तथा इसे "पूरब का वेनिस" भी कहा जाता है । कुछ लोग इसे राजस्थान का कश्मीर भी कहते हैं । उदयपुर चारों ओर से सुंदर अरावली पहाड़ियों से घिरा हुआ है जो इसे एक खूबसूरत पर्यटक स्थल बनाता है । उदयपुर का इतिहास 15वीं शताब्दी का है इसका नाम राणा उदय सिंह द्वितीय के नाम पर 'उदयपुर' रखा गया है । महाराणा उदय सिंह द्वितीय ने वर्ष 1559 में उदयपुर शहर की स्थापना की तथा मेवाड़ की राजधानी उदयपुर बनायी ।

उदयपुर के दर्शनीय स्थल:-

उदयपुर में मौजूदा राजस्थानी संस्कृति में रंग जाने का एहसास आपको अपनी ओर खींचकर ले आएगा । आइए अब उदयपुर दर्शनीय स्थल की सूची पर ध्यान केंद्रित करें:-

1. पिछोला झील (Pichola Lake) तथा गुलाब बाग (Gulab Bagh)

यह एक कृत्रिम झील है । इसका प्राकृतिक दृश्य देखकर आपको यह किसी वास्तविक झील से कम नहीं लगेगी । शाम के वक्त इमारतों और पानी पर पड़ती सूरज की किरणों से हर तरफ का नजारा सुनहरा हो उठता है और आप इसकी शोभा देखकर मोहित हो जाएंगे ।

2. सिटी पैलेस (City Palace) तथा क्रिस्टल गैलरी

पिछोला झील के किनारे बसे इस महल को राजस्थान का सबसे बड़ा महल माना जाता है । महल की अद्भुत मूर्तियां और रंग-बिरंगी तस्वीरें आपको नये ढंग से इसके इतिहास से परिचय कराएगी।

3. सज्जनगढ़ पैलेस (Sajjangarh Palace) तथा सज्जनगढ़ जैविक उद्यान उदयपुर (Sajjangarh Biological Park)

उदयपुर की सरहद पर बसा यह महल मेवाड़ वंश का स्थल है । इस महल का नाम इसके संरक्षक महाराणा सज्जन सिंह के नाम पर पड़ा । यह महल अरावली की पहाड़ियों की ऊँचाई पर बनाया गया है। सज्जनगढ़ जैविक उद्यान में एशियाई शेर, बाघ, तेंदुआ, सांभर हिरण, सियार, हायना, भालू, नीलगाय, जंगली सूअर, लोमड़ी, मगरमच्छ और घड़ियाल वगैरह मौजूद हैं ।

4. फतह सागर झील (Fateh Sagar Lake)

यह उदयपुर की दूसरी बड़ी झील है । इसकी असीम सुंदरता आपके मन को सुकून देगी, ऐसा सुकून जो आप कहीं और नहीं पा सकेंगे ।

5. जगदीश मंदिर (Jagdish Temple)

सिटी पैलेस में स्थित ये भगवान विष्णु का मंदिर है । यहाँ की मुख्य मूर्ति जिसमें विष्णु को चार हाथों वाला बनाया गया है वो केवल एक ही काले पत्थर द्वारा बनाई गई है । इस मूर्ति को चार छोटी मूर्तियों ने घेर रखा है जो भगवान गणेश, सूर्य भगवान, शक्ति की देवी और शिवजी की है ।

6. महाराणा प्रताप स्मारक (Maharana Pratap Samarak)

फतह सागर झील के किनारे पर इस स्मारक को बनाया गया है । चेतक पर बैठे महाराणा प्रताप अपने

शौर्यवान बलिदान की गाथा कहते हैं । 11 फीट ऊँची इस प्रतिमा को पीतल से बनाया गया है। उदयपुर आकर इस मूर्ति को देखना अपने आप में एक अलग ही गर्व की बात है।

7. सहेलियों की बाड़ी (Saheliyon Ki Bari) तथा सुखाड़िया सर्कल

फतह सागर झील के पास स्थित इस अत्यंत सौंदर्य पूर्ण बगीचे का निर्माण महाराणा संग्राम सिंह ने करवाया था। सुखाड़िया सर्किल 21 फुट ऊँचे फव्वारे के साथ एक गोल चक्कर है जिसे 1970 में बनाया गया था । इसका नाम मुख्यमंत्री श्री मोहन लाल सुखाड़िया के सम्मान में रखा गया था ।

8. नाथद्वारा मंदिर (Nathdwara Temple)

राजस्थान के उदयपुर जिले से 42 किलोमीटर उत्तर-पूर्व की ओर स्थित नाथद्वारा शहर, जो कभी सिहाड़ ग्राम के नाम से जाना जाता था, में प्रभु श्रीनाथजी मन्दिर में विराजमान हैं श्रीनाथजी ।

9. हल्दीघाटी (Haldighati)

यह उदयपुर से 40 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है । हल्दीघाटी राजस्थान के मेवाड़ का एक ऐतिहासिक स्थान है । यह अरावली पहाड़ों का एक पहाड़ी दर्रा है । हल्दीघाटी मेवाड़ के राणा प्रताप सिंह और आमेर के राजा मानसिंह के बीच लड़ाई के लिए प्रसिद्ध है ।

10. कुंभलगढ़ का किला (Kumbhalgarh Fort)

शहर से लगभग 64 किमी दूर स्थित, कुंभलगढ़ किला उदयपुर में एक वास्तुशिल्प आश्चर्य है, और निश्चित रूप से राजस्थान के सबसे असाधारण महलों और किलों में से एक है। 30 किमी में फैली एक विशाल दीवार के साथ, किला समुद्र तल से 1900 मीटर ऊपर है । कुंभलगढ़ किले का सुविचारित वास्तु सरल लेकिन प्रभावशाली है ।

पिछोला झील (Pichola Lake)

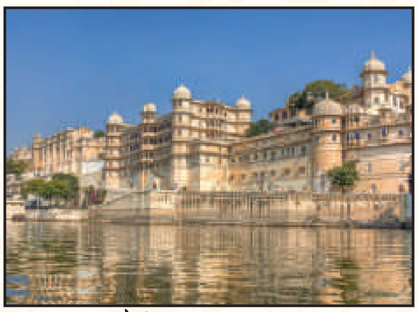

सिटी पैलेस (City Palace)

सज्जनगढ़ पैलेस (Sajjangarh Palace)

फतह सागर झील (Fateh Sagar Lake)

जगदीश मंदिर (Jagdish Temple)

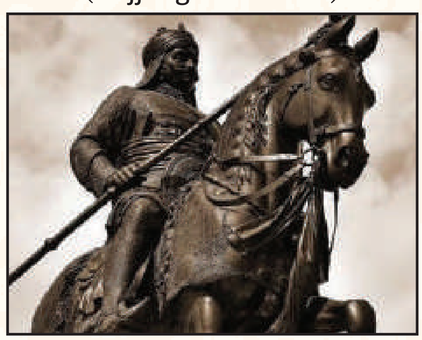

महाराणा प्रताप स्मारक (Maharana Pratap Smarak)

राकेश कुमार कुमावत
सहायक, राजस्व शाखा

वो पुराने दिन

वो पुराने दिन
वो सुहाने दिन
आशिकाने दिन
ओस की नमी में भीगे
वो पुराने दिन
दिन गुजर गए
हम किधर गए
पीछे मुड़के देखा पाया
सब ठहर गए
अकेले है खड़े
कदम नहीं बढ़े
चल पड़ेंगे जब भी कोई
राह चल पड़े
जायेंगे कहाँ
है कुछ पता नहीं
कह रहे हैं वो
हमारी खता नहीं
वो पुराने दिन
आशिकाने दिन

जीतेश मीणा
बहु-कार्य कार्मिक, प्रेषण शाखा

गुरु गोविंद दोऊ खड़े काके लागूं पाय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंन्द दियो बताय ।।

ई–ऑफिस

ई–ऑफिस का उद्देश्य अधिक प्रभावी और पारदर्शी अंतः और अंतर–सरकारी प्रक्रियाओं की शुरुआत करके शासन का समर्थन करना है । ई–ऑफिस का उद्देश्य सभी सरकारी कार्यालयों के कामकाज को सरल, उत्तरदायी, प्रभावी और पारदर्शी बनाना है । ओपन आर्किटेक्चर जिस पर ई–ऑफिस बनाया गया है, इसे एक पुनः प्रयोज्य ढांचा और एक मानक पुनः प्रयोज्य उत्पाद बनाता है, जिसे केंद्र, राज्य और जिला स्तर पर सरकारों में दोहराया जा सकता है । उत्पाद एक ही ढांचे के तहत स्वतंत्र कार्यों और प्रणालियों को एक साथ लाता है।

ई-ऑफिस के लाभः

- पारदर्शिता बढ़ाना – फाइलों को ट्रैक किया जा सकता है, और उनकी स्थिति हर समय सभी को पता होती है ।
- जवाबदेही बढ़ाना – गुणवत्ता की जिम्मेदारी और निर्णय लेने में तेजी की निगरानी करना आसान है।
- डेटा सुरक्षा और डेटा की प्रमाणिकता का आश्वासन देना ।
- सरकार के पुनः आविष्कार और पुनर्रचना के लिए एक मंच प्रदान करना।
- अनुत्पादक प्रक्रियाओं से कर्मचारियों की ऊर्जा और समय को मुक्त करके नवाचार को बढ़ावा देना।
- सरकार की कार्य संस्कृति और नैतिकता को बदलना ।
- कार्यस्थल और प्रभावी ज्ञान प्रबंधन में अधिक सहयोग को बढ़ावा देना ।

ई-ऑफिस के प्रोडक्टसः

ई–फाइलः सरकार उत्पादकता और इसकी आंतरिक प्रक्रियाओं में सुधार, निर्णय लेने में पारदर्शिता बढ़ाने और देश में समावेशी शासन के हिस्से के रूप में नागरिक भागीदारी लाने पर बहुत जोर दे रही है । शासन प्रक्रियाएं फाइलों के निर्माण, फाइल में नोटिंग, विभिन्न स्तरों पर निर्णय और अंत में पत्रों और अधिसूचनाओं के रूप में निर्णय जारी करने पर आधारित होती हैं । सरकार से कोई भी अनुरोध विभिन्न चरणों की विस्तृत प्रक्रिया से होकर गुजरता है जिसे कार्यप्रवाह कहा जाता है।

ज्ञान प्रबंधन प्रणाली (केएमएस): सरकार को विभिन्न श्रेणियों के दस्तावेजों का बड़ी मात्रा का प्रबंधन करना होता है । ये दस्तावेज नीतियां, प्रपत्र, अधिनियम और विनियम, परिपत्र, दिशानिर्देश, मानक और नियमावली हो सकते हैं । दस्तावेज के एक केंद्रीय भंडार को बनाए रखने से दस्तावेजों का एक ही भंडार रखने में मदद मिलती है जहां से सभी विभाग/मंत्रालय उपयोगकर्ता जानकारी तक पहुंच सकते हैं । ई ऑफिस केएमएस उपयोगकर्ताओं को इलेक्ट्रॉनिक दस्तावेज बनाने और प्रबंधित करने में सक्षम बनाता है जिन्हें देखा, खोजा और साझा किया जा सकता है । यह विभिन्न उपयोगकर्ताओं (ट्रैकिंग इतिहास) द्वारा संशोधित विभिन्न संस्करणों का ट्रैक रखने में भी सक्षम है । इसमें विभिन्न चरणों में दस्तावेज रखने के लिए एक गतिशील कार्यप्रवाह भी शामिल है।

ई-छुट्टीः ई-छुट्टी ऑनलाइन छुट्टी के लिए आवेदन करने, लागू छुट्टी की स्थिति, विवरण और छुट्टी को ट्रैक करने के लिए एक सरल सहज कार्यप्रवाह आधारित प्रणाली है । छुट्टी की स्वीकृति प्रस्तुत करने के स्वचालित पदानुक्रमित चैनल के माध्यम से सक्षम की जाती है और छुट्टी को उस पदानुक्रम में भेज दिया

जाता है जो कार्यप्रवाह में पूर्व-निर्धारित होता है । छुट्टी के नियम मौजूदा सरकारी नियमावली के अनुसार कॉन्फिगर किए गए हैं और छुट्टी प्रसंस्करण भूमिका आधारित है । यह प्रणाली कागज आधारित अनुप्रयोगों को खत्म करने और तेजी से समयबद्ध प्रसंस्करण में मदद करती है। स्वीकृति प्राधिकारी शेष छुट्टी देख सकता है और स्वीकृत करने से पहले विवरण भी देख सकता है।

ई-यात्राः ई-यात्रा एक ऐसी प्रणाली है जो दौरे के लिए आवेदन करने से लेकर बिलों के अंतिम निपटान तक कर्मचारी यात्रा कार्यक्रमों के कुशल प्रबंधन की सुविधा प्रदान करती है । यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि सभी यात्रा अनुरोधों का ठीक से हिसाब किया जाए । कर्मचारी बिना किसी परेशानी और कागजी कार्रवाई में देरी के दौरे के लिए आवेदन, रद्द, अनुमोदन/ अस्वीकार कर सकते हैं और रिकॉर्ड देख सकते हैं । कर्मचारियों के लिए, सिस्टम किसी भी समय उनके दौरे के विवरण को आसानी से देखने और ऑनलाइन दौरों का अनुरोध करने की अनुमति देता है। प्रबंधकों के लिए, दौरे की स्वीकृति में अब कागजी कार्रवाई शामिल नहीं है। सिस्टम कर्मचारी के दौरे और योजनाओं का पूरा ट्रेल्स प्रदान करता है ।

स्पैरोः स्पैरो व्यापक प्रदर्शन मूल्यांकन डोजियर पर आधारित एक ऑनलाइन प्रणाली है जिसे राज्य सरकार/ केंद्र सरकार द्वारा सेवा के प्रत्येक सदस्य के लिए बनाए रखा जाता है । इस प्रणाली का उद्देश्य अधिकारियों द्वारा इलेक्ट्रॉनिक रूप में एपीएआर भरने को इस तरह से सुविधाजनक बनाना है जो न केवल उपयोगकर्ता के अनुकूल हो बल्कि उनकी सुविधा के अनुसार कभी भी कहीं भी भरने की अनुमति देता है । भरने और जमा करने की प्रक्रिया के वर्कफ्लो पदानुक्रम में विभिन्न स्तरों पर अधिकारियों को समान सुविधा उपलब्ध होगी । इस प्रणाली से पूरी तरह से भरे हुए एपीएआर को जमा करने में होने वाली देरी को कम करने की भी उम्मीद है ।

पीआईएमएसः कार्मिक सूचना प्रबंधन प्रणाली (पीआईएमएस) एक कर्मचारी के विवरण को बनाए रखने के लिए एक वर्कफ्लो-आधारित प्रणाली है । कौशल सेट, संपर्क विवरण, पोस्टिंग और स्थान, सीजीएचएस, नामांकन, सेवा खंड-1 और खंड-2, ऋण, वेतन विवरण, एचबीए, रिकॉर्ड सत्यापन विवरण कर्मचारी पहचान का मुख्य विवरण है । पीआईएमएस उपयोगकर्ताओं को एक्सेस और भूमिका विशेषाधिकारों के अनुसार कर्मचारी व्यक्तिगत डेटा और रोजगार रिकॉर्ड दर्ज करने और अपडेट करने की अनुमति देता है । पीआईएमएस सेवा पुस्तिका के प्रावधानों के अनुसार एक कर्मचारी से आवश्यक सभी सूचनाओं को संग्रहीत करता है ।

अश्वनी कुमार बैरवा
सहायक, वित्त एवं लेखा शाखा

धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय,
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।

....माँ....

माँ तू कभी थकती क्यूँ नहीं
सबकी फिक्र करती है,
तू खुद की करती क्यूँ नहीं ?
मैंने कभी तुझे सोता नहीं देखा
किसकी बनी है ?
तेरी आँख लगती क्यूँ नहीं ?
दर राम का नहीं छोड़ती न ही अल्लाह का,
मांगती क्या है, बताती क्यूँ नहीं ?
तू ठीक है तुझे कोई फिक्र नहीं,
ये बात तेरे मुँह से अच्छी लगती क्यूँ नहीं ?
मेरी इच्छा बिना बताए कैसे बूझ लेती है ,
ये कौनसा इल्म है, पर्दा उठाती क्यूँ नहीं ?
तू मेरी तरफ भी है, तू उसकी तरफ भी है,
तू सब तरफ है, तू एक तरफ क्यूँ नहीं ?
भले ही हाथ काँपते और चेहरे पे झुर्रियां,
माँ तुझसे ज्यादा खूबसूरत कोई लगता क्यूँ नहीं ?

अमर चन्द
प्रवर श्रेणी लिपिक, प्रशासन शाखा

आशा

आशा एक ऐसी शक्ति है जो हमारे जीवन में नई ऊर्जा भर देती है । यह हमारे जीवन में नई उमंग पैदा करती है और हमारे सपने को सच करने की शक्ति देती है । आशा हमारे जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण तत्व है, जिसका हमारे जीवन पर गहरा असर होता है । जीवन के हर मोड़ पर आशा ही हमारी आदत बनती है, जिससे हम जीवन में प्रगति कर पाते हैं । आशा के बिना जीवन एक सुनसान और बेजान सा हो जाता है। आशा के बिना हमारा जीवन एक निरर्थक और व्यर्थ सा हो जाता है ।

आशा हमारी जीवन की प्रेरणा भी है । जब हम आशा से भरे हुए हैं, तब हम सभी कष्ट और परिश्रम को भी आसान कर पाते हैं । आशा का होना बहुत जरूरी है, लेकिन आशा की वजह से निराशा का भी सामना करना पड़ सकता है । जब हम आशा से भरे होते हैं और फिर भी हमारा सपना पूरा नहीं होता है, तो हमें गुस्से का अहसास होता है । लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि हम आशा छोड़ दें । हमें फिर से आशा से भरी जिंदगी की तरफ बढ़ना चाहिए और नई उमंग पैदा करने की कोशिश करनी चाहिए । आशा हमारी जिंदगी में एक प्रकाश है, जो हमें अंधकार से निकलने की शक्ति देती है।

आशा हमारे जीवन में एक नई शुरुआत है, जो हमें जीवन की संभावनाओं को समझने और उन्हें सच करने की शक्ति देती है । आशा हमारे जीवन में नई उम्मीदें और नई रोशनी भर देती है । आशा हमारे जीवन को बेहतर बनाने का रास्ता भी बताती है । इस तरह से, आशा हमारे जीवन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है । यह हमारे जीवन में एक नई ऊर्जा भर देती है और हमारे सपने को सच करने की शक्ति देती है । आशा हमारी जीवन की प्रेरणा भी है और हमारे जीवन में नई उमंग पैदा करती है। अतः हमें सदैव आशावान रहना चाहिए ताकि हम अपना जीवन बाधारहित जी सकें ।

लवी खत्री
बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा

पुस्तकों का महत्व

प्रस्तावनाः -

पुस्तक हजारों वर्षो से मानव सभ्यता की आधारशिला रही है, जिससे व्यक्ति समय और स्थान के पार एक-दूसरे से जुड़ते हैं, और दुनिया की विशालता और मानवीय अनुभव का पता लगाते हैं । वे ज्ञान को संरक्षित करने और इसे एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने, मनोरंजन करने, शिक्षित करने और सूचित करने के एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है । पुस्तकें सफलता की पहली कुंजी हैं, जो हमारे ज्ञान को बढ़ाने के साथ हमारी बुद्धि को भी विकसित करती है । पुस्तकें एक सच्चे शिक्षक की तरह हैं, जो हमें हमेशा अच्छी राह पर ले जाती हैं और हमारे जीवन को सफल बनाती हैं।

किताबों का जादूः -

किताबों में एक खास जादू होता है जिसका वर्णन करना मुश्किल है । किताबों में एक क्षमता है जो हमें अलग-अलग दुनिया, समय और स्थान पर ले जाती हैं । शायद यह जुड़ाव की भावना है जो हम महसूस करते हैं जब हम किसी किताब को पढ़ते हैं । कारण जो भी हो, इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि किताबें हमारे दिल और हमारी संस्कृति में एक विशेष स्थान रखती हैं । मनुष्य के जीवन में सभी चीजें समय के साथ-साथ बदलती और पुरानी होती रहती हैं मगर किताब से लिया गया ज्ञान ना तो बदलता है न ही पुराना होता है ।

ज्ञान का संरक्षणः -

पुस्तकों के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक ज्ञान को संरक्षित करना है । पुस्तकों ने हमें जानकारी को दर्ज करने और पीढ़ी दर पीढ़ी संचारित करने में मदद की है, ज्ञान को संरक्षित किया है जो अन्यथा इतिहास में खो सकता था । कुछ ऐसी पुस्तकें हैं जो मनुष्य जाति के जीवन का आधार हैं जैसेः- गीता, रामायण और बाइबिल जिन्हें पढ़कर मन को परम शांति का अनुभव होता है । एक पुस्तक जिसका नाम अर्थला है इसको हम हिंदी जगत का मार्वल कह सकते हैं क्योंकि इसमें मार्वल की तरह विभिन्न प्रकार के पात्रों को अनेक प्रकार की शक्तियां दी गई है।

प्रेरणा, शिक्षा, और मनोरंजनः -

ज्ञान को संरक्षित करने और मानवीय अनुभव की खोज करने के अलावा, पुस्तकें प्रेरणा, शिक्षा और मनोरंजन के स्रोत के रूप में भी काम करती हैं । वे हमें अपने सपनों तक पहुँचने, नई संभावनाओं की कल्पना करने और दुनिया को एक अलग रोशनी में देखने के लिए प्रेरित करती हैं। वे हमें विज्ञान और इतिहास से लेकर कला और साहित्य तक, विषयों की एक विस्तृत श्रृंखला के बारे में शिक्षित करती हैं। और वे हमारा मनोरंजन करती हैं, हमें रोजमर्रा की जिंदगी के तनाव और चिंताओं से मुक्ति दिलाती हैं।

पढ़ने का आनंदः -

पुस्तक पढ़ने का सबसे बड़ा आनंद तो यही है कि आप उस पुस्तक के अंदर लिखित वातावरण में चले जाते हो, जहां आप खुद को उस कहानी का इकलौता दर्शक मान लेते हो और आपको वे सब अक्षर जो थोड़ी देर पहले सिर्फ अक्षर मात्र थे वे अब अलग-अलग आवाजों में सुनाई देते हैं । यह माहौल आपको कुछ इस प्रकार लगता है जैसे आप कोई 3डी मूवी देख रहे हों ।

उपसंहारः -

पुस्तकों ने हजारों वर्षो से मानव सभ्यता में एक आवश्यक भूमिका निभाई है । पुस्तकों ने हमें ज्ञान को संरक्षित करने, मानवीय अनुभव का पता लगाने, प्रेरित करने, शिक्षित करने और मनोरंजन करने में सहायता की है । किताबें पढ़ने से ही कुछ नहीं होता है, किताबों में दिए गये ज्ञान को अपने जीवन में उतारते हुए उसका उपयोग लोगों की भलाई के लिए करना चाहिए।

कमलेश शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक, वित्त एवं लेखा शाखा

क्या फर्क पड़ता है

इस संसार में ऐसी कई गतिविधियाँ है
जिनके होने या ना होने से कोई फर्क नहीं पड़ता
घोंसले में एक तिनका कम होने से घोंसला नहीं टूटता
कोई बदलाव नहीं आएगा अगर आकाशगंगा में
एक दो तारे टूट जाए आज

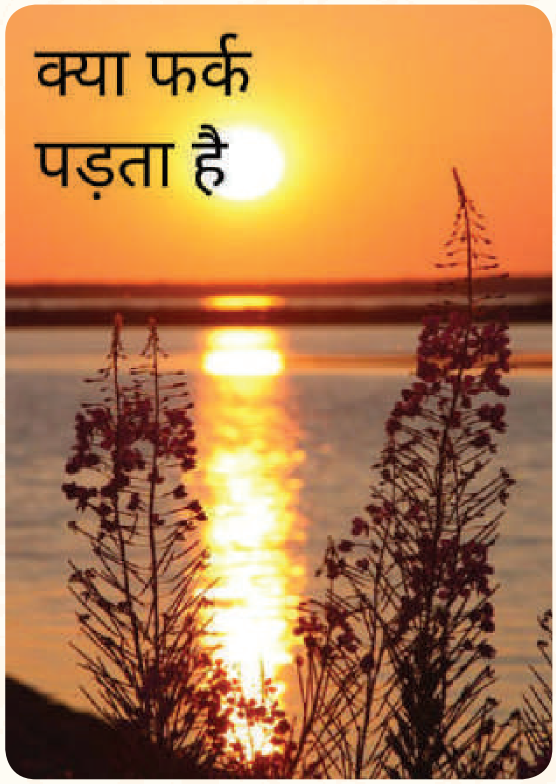

क्या फर्क पड़ता है अगर
आज में कुछ ना कहूँ
या सब कुछ कह दूँ

क्या फर्क पड़ेगा मेरे आज सब कुछ कह देने से ?
शायद कल मेरे पास तुम्हें कहने के लिए कुछ न हो,
लेकिन क्या फर्क पड़ता है मेरे कुछ न कहने से

फिर भी क्यूँ फर्क पड़ता है इतना
तुम्हारे होने से,
तुम्हारे ना होने से,
तुम्हारे बात करने से,
तुम्हारे बात ना करने से

शायद फर्क पड़ता होगा उस पेड़ को
जिसका टूटा हुआ तिनका जो पूरी डाल बन सकता था
आज एक घोंसले में है
फर्क पड़ता होगा उस प्रेमी को
जिसने टूटते तारे को देखकर एक बार और
दुआ में तुम्हें माँगा हो ।

आशीष शर्मा
सहायक, विधि शाखा

योग के लाभ

योग हमारे शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है। योग का उद्देश्य शरीर, मन एवं आत्मा के बीच संतुलन अर्थात् योग स्थापित करना होता है । योग की प्रक्रिया में जब तन, मन और आत्मा के बीच संतुलन एवं योग (जुड़ाव) स्थापित होता है, तब आत्मिक संतुष्टि, शांति एवं चेतना का अनुभव होता है । योग शरीर को शक्तिशाली एवं लचीला बनाए रखता है, साथ ही तनाव से भी छुटकारा मिलता है।

यह शरीर के जोड़ों एवं मांसपेशियों में लचीलापन लाता है, मांसपेशियों को मजबूत बनाता है, शारीरिक विकृतियों को काफी हद तक ठीक करता है, शरीर में रक्त-प्रभाव को सुचारू करता है तथा पाचन-तंत्र को मजबूत बनाता है । इन सबके अतिरिक्त यह शरीर की रोग-प्रतिरोधक शक्तियां बढ़ाता है । कई प्रकार की बीमारियों: जैसे- अनिद्रा, तनाव, थकान, चिंता इत्यादि को दूर करता है तथा शरीर को ऊर्जावान बनाता है।

योग से होने वाले मानसिक स्वास्थ्य के लाभ पर गौर करें, तो पता चलता है कि यह मन को शांत एवं स्थिर रखता है, तनाव को दूर कर सोचने की क्षमता, आत्मविश्वास तथा एकाग्रता को बढ़ाता है । इसलिए छात्रों, शिक्षकों एवं शोधार्थियों के लिए योग विशेष रूप से लाभदायक सिद्ध होता है, क्योंकि यह उनके मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने के साथ-साथ उनकी एकाग्रता भी बढ़ाता है, जिससे उनके लिए अध्ययन-अध्यापन की प्रक्रिया सरल हो जाती है ।

योग के सभी आसनों से लाभ प्राप्त करने के लिए सुरक्षित और नियमित अभ्यास की आवश्यकता है । योग का अभ्यास आंतरिक ऊर्जा को नियमित करने के द्वारा शरीर और मस्तिष्क में आज विकास के माध्यम से आत्मिक प्रगति को लाना है । योग के दौरान साँस की क्रिया में ऑक्सीजन लेना और छोड़ना सबसे मुख्य है । दैनिक जीवन में योग का अभ्यास करना हमें बहुत-सी बीमारियों से बचाने के साथ-साथ भयानक बीमारियों जैसे- कैंसर, मधुमेह डायबिटीज, उच्च निम्न रक्तचाप, हृदयरोग, किडनी का खराब होना, लीवर का खराब होना, गले की समस्या तथा अन्य बहुत सी मानसिक बीमारियों से भी हमारी रक्षा करता है ।

एक स्वस्थ व्यक्ति अपने जीवन में बहुत लाभ कमा सकता है और स्वस्थ पूर्ण जीवन जीने के लिए नियमित योग बहुत ही आवश्यक है । आज के आधुनिक जीवन में तनाव काफी बढ़ चुका है और आसपास का पर्यावरण भी स्वच्छ नहीं है । बड़े शहरों में रहने वाले लोगों को कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है । बेहतर स्वास्थ्य का मतलब होता है - बेहतर जीवन । आप 20 से 30 मिनट का योग करके अपने जीवन को काफी बेहतर बना सकते हैं ।

'योग करें और निरोगी रहें'

आशीष शर्मा
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

कार्यालय की गतिविधियाँ–कैमरे की नजर से

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

गोवा में आयोजित 12वीं क.रा.बी.नि. जोनल खेलकूद समागम (पश्चिम क्षेत्र) में उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर की टीम के सदस्य

हिंदी कार्यशाला

सद्भावना दिवस पर शपथ लेते हुए समस्त अधिकारी व कार्मिक

राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह पर मुख्य अतिथि को भेंट प्रदान करते हुए अधिकारीगण

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

माननीय संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण की एक झलक

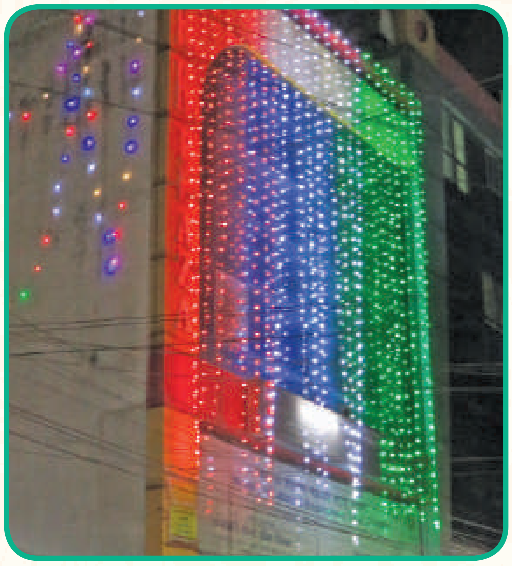

एसिक दिवस पर जगमगाता हुआ कार्यालय भवन

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर महिलाओं के लिए आयोजित जाँच शिविर

कार्यालय में मनाए गए स्वतंत्रता दिवस की एक झलक

खालसा पेट्रोल पंप पर हुए भयानक अग्नि कांड की कहानी ईएसआईसी बनी जीवनदायिनी

उक्त दुर्घटना प्रकरण जब घटित हुआ, उस समय मैं औषधालय सह शाखा कार्यालय, अजमेर में सहायक के पद पर कार्यरत था । प्रतिदिन की तरह सायकाल: के वक्त सभी अधिकारी/कर्मचारी कार्यालय में बैठे अपना काम कर रहे थे, तब एक बीमित अपनी छुट्टी का पर्चा जमा कराने आया व उसने बताया कि खालसा पेट्रोल पंप परबतपुरा में भयानक आग लग गयी है जिसमें कई लोग जल गए हैं एवं 1-2 व्यक्ति तो मर भी गए हैं। यह बात सुनकर काफी दु:ख हुआ तथा अनुमान लगाया कि इस अग्नि कांड के कारण कई दुर्घटना रिपोर्ट आएगी । अगले दिन अखबार देखा तो उसमें दुर्घटना प्रकरण के बारे में पूरी खबर दी गई थी तथा 05 कर्मचारियों की मृत्यु व 01 कर्मचारी के बुरी तरह झुलस जाने की जानकारी दी गई और जैसा अनुमान था अगले एक-दो दिन में 06 दुर्घटना प्रकरण रिपोर्ट कार्यालय में प्राप्त हो गई ।

शाखा कार्यालय में दुर्घटना रिपोर्ट प्राप्त होने पर उस पर कार्रवाई की जानी अपेक्षित थी। इसलिए प्राप्त सभी दुर्घटना रिपोर्ट की प्रविष्टि रजिस्टर में कर शाखा प्रबंधक ने सभी प्रकरणों का निस्तारण करने के लिए कार्य शुरू किया । उक्त प्रकरणों में शाखा प्रबंधक को दुर्घटना स्थल का मौका मुआयना व जाँच करनी थी किन्तु उन्होंने मुझे भी साथ चलने को कहा । शाखा प्रबंधक के निर्देशानुसार नियोजक फर्म को पत्र तथा दूरभाष पर जल्दी मौका मुआयना व जाँच कराने के निर्देश दिये गए तो उन्होंने जानकारी दी कि पुलिस प्रशासन द्वारा पेट्रोल पम्प को सीज कर दिया गया है इसलिए प्रशासन से अनुमति मिलते ही जाँच करा दी जाएगी ।

पुलिस प्रशासन द्वारा 03 दिन बाद दुर्घटना स्थल पर जाने की अनुमति दे दी गई तो हम लोग दुर्घटना स्थल पर जाँच करने पहुँचे, तब नियोजक ने बताया कि यह पेट्रोल पंप भारत पेट्रोलियम के अधीन संचालित है तथा यहां पर पूर्व में वाहनों में सी.एन.जी. गैस भी भरी जाती थी । उक्त सी.एन.जी. गैस टेंक में थोड़ी गैस थी जिसे खाली किए जाने का काम भारत पेट्रोलियम तथा इंडियन ऑइल द्वारा मिलकर किया जा रहा था । सायं 5:00 - 5:30 बजे गैस टेंक को ईवीआर गाड़ी द्वारा खाली किया जा रहा था, तभी उसमें शॉर्ट सर्किट के कारण आग लग गई तथा टैंक में जो गैस थी उसने भयंकर आग पकड़ ली। आग इतनी भयंकर थी कि ईवीआर गाड़ी पूरी जल गई तथा उसको चलाने वाला ड्राईवर व अन्य कर्मचारी जो यह काम कर रहे थे, वे सब बुरी तरह झुलस गए, तब उन्होंने एम्बुलेंस, फायर ब्रिगेड को फोन कर बुलाया तथा जख्मी लोगों को एम्ब्युलेन्स से अस्पताल पहुँचाया । अस्पताल पहुँच कर 03 कार्मिकों ने तो उसी दिन दम तोड़ दिया तथा 02 लोगों की इलाज के दौरान मृत्यु हो गई । नियोजक से बात कर हम उस टैंक के पास पहुँचे जहाँ यह हादसा हुआ, जली हुई गाड़ी व वहाँ की स्थिति को देखकर रोंगटे खड़े हो गए व उस दिन उन कर्मचारियों पर क्या बीती होगी, यह सोचकर मन काफी विचलित हो गया था । शाखा प्रबंधक द्वारा नियोजक से आवश्यक दस्तावेज व वहां उपस्थित गवाहों के बयान लिए गए तथा मृत कर्मचारियों के परिवार वालों की जानकारी लेते हुए उन्हें कार्यालय में भेजने को कहा ।

उक्त प्रकरण में इंडियन ऑइल कार्पोरेशन में ठेकेदार के अधीन कार्यरत ईवीआर गाड़ी का ड्राईवर भी दुर्घटना का शिकार हुआ था, इस कारण उसकी भी जाँच करनी थी, इसलिए हम लोग इंडियन ऑइल के प्लांट भी गए तथा वहां के अधिकारी व ठेकेदार से जानकारी ली तो उन्होंने भी वही बताया जो नियोजक खालसा पेट्रोल पंप द्वारा बताया गया था । प्लांट अधिकारी ने बताया कि इस तरह के कार्य हमेशा भारत पेट्रोलियम तथा इंडियन ऑइल द्वारा मिलकर ही किए जाते हैं, जिस ईवीआर गाड़ी से गैस को खाली किया

जाता है, वह उन्हीं के पास है तथा ड्राईवर की नियुक्ति ठेकेदार द्वारा की गयी थी, साथ ही उन्होंने यह भी बताया कि इस दुर्घटना की खबर गाँववालों को लगने पर उन्होंने प्लांट को घेर लिया तथा धरना प्रदर्शन शुरू कर मुआवजे की माँग करने लगें। फिर काफी समझाइश, उचित मुआवजा राशि देने की घोषणा व मृतक के परिवार को पेंशन देने का आश्वासन देने के बाद ही सब लोग वहाँ से गए । प्रबंधक द्वारा नियोजक ठेकेदार तथा प्लांट अधिकारी से आवश्यक दस्तावेज, उपस्थित गवाहों के बयान लिए गए व गेट पास की जाँच की गई तथा मृत कर्मचारी के परिवार वालों की जानकारी लेकर हम कार्यालय आ गए ।

05-07 दिन बाद उक्त दुर्घटना प्रकरण में जलने पर दुर्घटना का शिकार हुआ बीमित भी अपनी छुट्टी के पर्चे जमा कराने कार्यालय आया । उसकी स्थिति देखकर दुर्घटना की भयानकता का पता चल रहा था। बीमित से पूरी जानकारी लेते हुए, उसका बयान दर्ज किया व सभी आवश्यक दस्तावेज प्राप्त किए गए। अगले 02-03 दिन में मृतक बीमितों के परिजन भी कार्यालय में उपस्थित हो गए । 03 मृतकों के बीबी-बच्चे थे व 02 मृतकों के बूढ़े माता-पिता थे। उन सब को देखकर मन में उनके प्रति काफी दया भाव उत्पन्न हुआ । उक्त मामले में बात करने पर कई परिजन तो रोने लगे । काफी समझाने के बाद वे चुप हुए तथा जल्दी कार्रवाई करने का निवेदन करने लगे ताकि अपना और अपने बच्चों का पालन पोषण कर सकें । आश्रित परिजनों ने अपने कागजात जैसे बैंक खाता, पहचान पत्र, जीवन प्रमाण-पत्र, फोटो तथा आवश्यक फॉर्म की सत्यापित प्रति प्रस्तुत की तथा शाखा प्रबंधक द्वारा उन्हें हर संभव कार्रवाई अतिशीघ्र करने का आश्वासन दिया गया ।

03-04 दिन में प्रबंधक द्वारा सभी दुर्घटना प्रकरणों को स्वीकृत कर दिया गया तथा स्वीकृति पत्र जारी कर दिए गए । मृतक बीमितों के परिजनों को जब स्वीकृति पत्र प्रदान किए गए तो सभी की आँखों में आँसू आ गए । उन्हें देख कर लग रहा था कि उनके परिजन की कमी तो कभी पूरी नहीं हो सकती किन्तु जो आर्थिक क्षति उन्हें अपने व्यक्ति के जाने से हुई है उसकी कुछ हद तक भरपाई इस पेंशन द्वारा हो जाएगी। वहाँ उपस्थित सभी परिजनों ने कहा कि हमें तो यकीन ही नहीं हो रहा है कि हमें भी पेंशन मिलेगी, तब प्रबंधक ने उन्हें समझाया कि हमने आप पर कोई उपकार या अहसान नहीं किया है, ये आपका अधिकार है और इसे कोई नहीं रोक सकता है । आश्रित परिजन सभी का धन्यवाद कर कार्यालय से चले गए । इस तरह एक अग्नि कांड में कई घर बर्बाद तो हो गए, किन्तु कर्मचारी राज्य बीमा निगम द्वारा देय आश्रित जन हितलाभ के कारण परिवार वालों को आर्थिक हितलाभ मिला और वे जीवन भर इसका लाभ लेते रहेंगे । तब मुझे यह अहसास हुआ कि हम उस संस्थान में कार्य करते हैं जहाँ हम अपना कार्य करते हुए कई योग्य बीमित परिवारों की भलाई भी कर रहे हैं जो कि काफी गर्व की बात है ।

कमल कुमार
सहायक, राजस्व शाखा

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।

"भारत का गाँव"

गाँव तो गाँव है।।

जिंदगी की आपाधापी से दूर
सुकून की एक छाँव है।
गाँव तो गाँव है।।

ना छल, ना कपट ,
ना जिंदगी के दांव है।
गाँव तो गाँव है।।

कहीं खेत, कहीं खलिहान
तो कहीं बरगद की छांव है।
गाँव तो गाँव है।।

निश्चल लोग, निश्चल मन
पंछियों का कलरव और कांव है।
गाँव तो गाँव है।।

शहर से दूर, शुद्धता की ओर,
मिट्टी ओर विरासत का रखाव है।
गाँव तो गाँव है।।

अपनापन, प्यार, दुलार, शांति,
प्रेम, करुणा सब कुछ तो है
यही तो भारत का गाँव है।
गाँव तो गाँव है।।

संदीप भावसार
आईटी सहायक

संघर्ष

जीव विज्ञान के एक शिक्षक अपने छात्रों को पढ़ा रहे थे कि कैसे एक कैटरपिलर तितली में बदल जाता है । उन्होंने छात्रों से कहा कि अगले कुछ घंटों में तितली कोकून से बाहर आने के लिए संघर्ष करेगी, लेकिन किसी को भी तितली की मदद नहीं करनी चाहिए । फिर वह चला गया । छात्र इंतजार कर रहे थे और यह हो गया । तितली कोकून से बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रही थी, और शिक्षक की सलाह के खिलाफ, छात्रों में से एक को उस पर दया आ गई और उसने तितली को कोकून से बाहर निकालने में मदद करने का फैसला किया । उसने तितली की मदद के लिए कोकून को तोड़ दिया ताकि उसे और संघर्ष न करना पड़े । लेकिन कुछ देर बाद ही तितली की मौत हो गई ।

जब शिक्षक वापस लौटे, तो उन्हें बताया गया कि क्या हुआ था । उन्होंने इस छात्र को समझाया कि यह प्रकृति का नियम है कि कोकून से बाहर आने का संघर्ष वास्तव में तितली के पंखों को विकसित और मजबूत करने में मदद करता है । तितली की मदद करके लड़के ने तितली को उसके संघर्ष से वंचित कर दिया था और तितली मर गई । इसी सिद्धांत को अपने जीवन में लागू करें । बिना संघर्ष के जीवन में कुछ भी सार्थक नहीं आता । माता-पिता के रूप में हम उन लोगों को चोट पहुँचाते हैं जिन्हें हम सबसे ज्यादा प्यार करते हैं क्योंकि हम उन्हें ताकत हासिल करने के लिए संघर्ष करने की अनुमति नहीं देते हैं।

रामावतार मीणा
बहु-कार्य कार्मिक, सामान्य शाखा

संविधान का महत्व

संविधान का महत्व बहुत अधिक है क्योंकि यह देश के निर्माण और चलाने का आधार है । संविधान एक ऐसा दस्तावेज है जिसमें देश के नागरिकों के लिए कानून, न्याय, अधिकार, कर्तव्य, रीति-रिवाज और उनकी सुरक्षा शामिल है । संविधान किसी देश की राजनीति और सामाजिक विकास के लिए एक बड़ा सहारा है । देश के नागरिकों को समझने और उसके नियमों और विनियमों को समझने का मौका मिलता है । संविधान किसी देश के संवैधानिक विकास का एक बड़ा आधार है, इसमें अनेक नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य समाहित हैं।

संविधान एक ऐसा दस्तावेज है जो नागरिकों के अधिकारों के लिए, उन्हें सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया है । इसके अलावा, संविधान एक देश के नागरिकों के लिए जिम्मेदारी, एक सामान्य मूल्य और सुरक्षा का दस्तावेज है । किसी देश का संविधान सभी सामाजिक वर्गों के लिए एक सामान्य कानून है, यह सभी के लिए समान अधिकारों और कर्मों का प्रभाव है ।

संविधान किसी देश की सुरक्षा और समृद्धि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है । इससे देश के नागरिकों के अधिकार और कर्तव्य का प्रभाव बनता है और उन्हें सुरक्षित रखा जाता है । संविधान देश का सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसके द्वारा देश की स्थिति और नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जाती है

निशांत मीणा
बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा

"जीवन दर्शन"

अक्सर कहा जाता है कि सदैव आगे बढ़ते रहने का नाम ही जीवन है । देखा जाए तो यह पूरा सच नहीं है । जीवन में लौटना भी उतना ही आवश्यक है, जितना आगे बढ़ना। किसी भी उड़ते हुए पक्षी को देख लीजिए, उसकी उड़ान कितनी ऊँची होती है । उस उड़ान को हम उसकी प्रगति कह सकते हैं, पर क्या वास्तव में वह उड़ान उसकी प्रगति है ? उसकी सफलता उड़ान में नहीं, बल्कि उड़ान के बाद अपने घरौंदे में लौटकर अपने परिवार के बीच आने में है ।

टॉलस्टाय की एक बेहद मशहूर कहानी है, जिसमें एक आदमी राजा के पास जाकर रोजी-रोटी के लिए कुछ माँगता है । राजा उससे कहता है कि सुबह आओ और एक स्थान से चलना शुरू करो । शाम तक उसी स्थान पर लौट आओगे, तो जहाँ तक गए थे, वहाँ तक की पूरी जमीन तुम्हारी । गरीब आदमी खुश हो गया । सुबह होते ही वह दौड़ने लगा । इस धुन में वह लौटना भूल गया । फिर शाम होने लगी, अब उसने लौटने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा दी । आखिर में वह गिर पड़ा । लालच ने उसके प्राण ले लिए । अब जरा उस आदमी की जगह अपने आपको रखकर कल्पना करें, कहीं हम भी तो वही भूल नहीं कर रहे हैं । हमें अपनी चाहतों की सीमा का पता नहीं होता । हमारी जरूरतें तो सीमित होती हैं, पर चाहतें अनंत । अपनी चाहतों के मोह में हम लौटने की तैयारी ही नहीं करते, जब करते हैं तो बहुत देर हो चुकी होती है । फिर हमारे पास कुछ भी नहीं बचता ।

याद करें, महाभारत का प्रसंग । अभिमन्यु को आगे बढ़ना तो आता था, पर लौटना नहीं आता था । वह नहीं लौट पाया । आधे ज्ञान ने उसकी जान ले ली । लौटने में एक सुकून है । जिसे लौटना आता है, वही जिंदगी को अच्छी तरह से जी सकता है । जो लौट नहीं सकता, वह केवल आगे बढ़कर अपने परिवार के लिए धन संग्रह ही कर सकता है । परिवार में वह अपनी खुशियों की कुर्बानी दे देता है । आखिर में वह न तो परिवार का रह पाता है और न ही स्वयं का । आज भी यही हो रहा है । बच्चे को प्यार देने के लिए माता-पिता के पास समय नहीं है । बच्चा उनके प्यार को तरसता रहता है । धीरे-धीरे वह कुंठित होने लगता है । माता-पिता जब तक उसकी परेशानी समझ पाते हैं, तब तक काफी देर हो जाती है । उसके बाद पछताने के सिवाय उनके पास कुछ भी नहीं रह जाता है ।

लौटना यानी जमीन से जुड़ना । पक्षी ऊँची से ऊँची उड़ान भरकर आखिर अपने घरौंदे में ही लौटते हैं, तभी सुकून पाते हैं । रोजी-रोटी कमाकर शाम को थक-हारा मजदूर अपनी झोंपड़ी में आकार बच्चों के साथ सुकून पाता है, वह अपने आप में एक अनोखा आनंद है । इसलिए सच्चे आनंद की प्राप्ति आगे बढ़ने में नहीं, बल्कि लौटने में छिपी है । लौटना यानी दु:खी जीवन को छोड़ आनंदमय जीवन की ओर लौटना, यही जीवन की सच्चाई है । इसे स्वीकार कर आप आनंद से एकाकार कर सकते हैं ।

बाबू लाल मीणा
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का, पढ़े सो पंडित होय।

सफलता

नित लड़ो नित जीतो
साहस मात्र सहारा है
संघर्ष करके आगे बढ़ो
ये जीवन सिर्फ तुम्हारा है
लड़ना सीखो भिड़ना सीखो
बाधाओं से टलना सीखो
औरों को तुम कहने दो
जहाँ कद्र नहीं वहाँ रहने दो
गैर छोड़ो अपने छोड़ो
खोने से कुछ पाना सीखो
कोई नहीं जब तेरे साथ
रख ईश्वर में तू विश्वास
सफल होना कुछ दूर नहीं
वो सफलता है कोई नूर नहीं
तू कर प्रयत्न हो जा पार
दिन लगेंगे दो या चार ।

पूजा मीणा
बहु-कार्य कार्मिक, प्रशासन शाखा

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोलै जानि,
हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

चाइनीज बाम्बू

अमन एक दिन अपने पुराने दोस्त जितेश से मिलकर बहुत खुश हुआ और जितेश की डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी होने की खबर ने उसकी खुशी को दोगुना कर दिया । जितेश कहने लगा कि अब जल्द ही उसकी नौकरी किसी बड़े से निजी अस्पताल में एक लाख रूपये महीने तनख्वाह पर मिलना भी सुनिश्चित हो गयी है । जिसे सुनकर अमन के चेहरे पर एक अजीब सी उदासी छा गई । उस उदासी को और गहरा होते देख जितेश ने अमन से पूछा कि तुम्हारी प्रशासनिक सेवक बनने की तैयारी कैसी चल रही है ? अमन ने उदास मन से जवाब दिया "हां ठीक ही चल रही है" । जितेश ने बात की गहराई को भापते हुए ज्यादा दबाव देकर पूछा तब अमन ने कहा देखो दोस्त हमने अपनी शुरूआती पढ़ाई साथ-साथ खत्म भी की फिर तुम डॉक्टरी की पढ़ाई करने मेडिकल कॉलेज चले गए और मैं दिल्ली जाकर अपने कॉलेज के साथ-साथ प्रशासनिक सेवक बनने की तैयारी करने लगा । स्नातक की डिग्री लेने के बाद मैं बड़ी उम्मीद के साथ अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा की परीक्षा में बैठा लेकिन स्नातक को मिलाकर आज 5 वर्ष के भरसक प्रयास के बाद भी मेरे हाथ खाली है । मेरी सारी मेहनत व्यर्थ जाती दिख रही है ।

अमन की पूरी बात सुनते ही जितेश को अपने वनस्पति विज्ञान के विषय में पढ़े हुए चाइनीज बाम्बू के पौधे के बारे में याद आया और उसने अमन को बताया कि चीन के जंगल में एक बांस का पौधा पाया जाता है जिसका बीज अगर आप जमीन में बोते हो और वर्ष भर आप उसे पानी, खाद एवं लगातार सुरक्षा देते हो तो भी उसकी एक भी टहनी, कलि या कोई पत्ती भी जमीन के बाहर नहीं आती है और यही काम आप लगातार हर दिन पूरी ईमानदारी से करते हो तो भी दो वर्ष, तीन वर्ष यहाँ तक की चार वर्ष बीतने पर भी यह बीज जमीन के बाहर नहीं निकलता है । लेकिन चार वर्ष बाद एक दिन इसकी एक कलि धीरे से मिट्टी के बाहर आती है और बहुत तेजी से बढ़ने लगती है और फिर इतनी तेजी से ऊपर की और बढ़ती है कि केवल दो ही हफ्तों में ये 25 फुट लम्बा पेड़ बन जाती है । यह पौधा जमीन से बाहर निकलने के बाद एक दिन में लगभग 36 इंच तक बढ़ता है। यह कुछ ऐसा है जैसे आप किसी पौधे को अपनी आँखों से बढ़ते हुए देख रहे हो । इसकी एक-एक पत्ती को बनते हुए देखना किसी अजूबे से कम नहीं है । देखते ही देखते यह पौधा सिर्फ 2 महीनो में अपनी अधिकतम ऊँचाई लगभग 90 फुट पर पहुँच जाता है ।

हैरान होते हुए अमन ने जितेश से पूछा कि ऐसा कैसे हो सकता है कि कोई बीज सिर्फ दो महीनो में विशाल पेड़ बन जाए ? तब जितेश ने उसे समझाया कि यह पेड़ चार वर्ष और दो महीने में 90 फुट लम्बा होता है । चार साल तक यह पौधा अपनी पूरी ताकत जमीन में अपनी जड़ों को गहरी और गहरी करने में लगाता है ताकि फिर बाद में होने वाली तेज वृद्धि और इसकी ऊँचाई को संभाल सके ।

अब अमन चाइनीज बाम्बू के इस पौधे से प्रेरणा लेकर एक बार फिर से प्रशासनिक सेवा की परीक्षा की तैयारी में जुट जाता है और इस बार दोगुनी ताकत के साथ, क्योंकि अमन की तैयारी की जड़े बहुत गहरी थी इसलिए वह इस बार परीक्षा में सफलता भी हासिल करता है, तब उसे अपने दोस्त जितेश की याद आती है ।

सुरेन्द्र मीणा,
बहु-कार्य कार्मिक, राजस्व शाखा

GeM–ई –मार्केट – खरीद की पुनर्कल्पना

1. GeM- पोर्टल का परिचय

GeM का पूर्ण रूप (full form है- **गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस (ई -बाजार)**, केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री द्वारा **9 अगस्त** 2016 को गवर्नमेंट ई-मार्केटप्लेस पोर्टल का शुभारंभ किया गया था। GeM पोर्टल, महानिदेशक, माँग एवं आपूर्ति (DGS&D) की एक उत्कृष्ट पहल है जिसके द्वारा सरकारी विभागों की सभी आवश्यक सेवाओं एवं सामान की खरीद ऑनलाइन माध्यम से आसानी से की जा सकती है। GeM portal को तकनीकी सहायता **राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस विभाग** (इलेक्ट्रोनिक एवं सूचना प्रोद्योगिकी मंत्रालय) द्वारा प्रदान की जाती है। इस पोर्टल के माध्यम से एकाधिक खरीद प्रणालियों जैसे कि **बोली, प्रत्यक्ष खरीद एवं नीलामी** द्वारा क्रय-विक्रय किया जा सकता है ।

2. GeM- पोर्टल का उद्देश्य

GeM पोर्टल का मुख्य उद्देश्य सरकारी खरीद में पारदर्शिता एवं दक्षता लाना है। यह **कैशलेस, पेपरलेस** एवं सिस्टम द्वारा संचालित होने वाला पोर्टल है, जो ऑनलाइन व्यवसाय की गति को तीव्र एवं सुगम बनाता है। किसी भी राजकीय विभाग द्वारा इस पोर्टल पर आवश्यक सामग्री एवं वस्तुओं की खरीद आसानी से की जा सकती है। इस पोर्टल पर उपलब्ध सभी उत्पाद उच्च गुणवत्ता वाले हैं, क्योंकि सभी **विक्रेताओं का मूल्यांकन** एवं **बाजार सेनीटाइजेशन** जैसे तंत्र स्थापित किए गए हैं।

3. GeM- पोर्टल पर क्रय-विक्रय

GeM पोर्टल पर पंजीकरण करने के बाद ईमेल, मैसेज या फोन द्वारा टेंडर के विषय में जानकारी प्रदान की जाती है। GeM पर सभी प्रकार की छोटी तथा बड़ी वस्तुओं जैसे **पेन**, **पेपर**, **कुर्सी**, **मेज**, **फर्निचर** आदि की खरीद के लिए सरकार द्वारा **टेंडर (निविदा)** जारी किए जाते हैं, टेंडर प्राप्त करने के लिए बोली लगानी पड़ती है, जिस **विक्रेता (वेंडर)** के बोली के दौरान वस्तु या सेवा के दाम कम होते हैं, उसे टेंडर प्रदान कर दिया जाता है। इस पोर्टल पर भुगतान हेतु बैंकों के साथ Gem Pool Account (GPA) एकीकृत किया गया है, जिससे ऑनलाइन भुगतान सुगमता से होता है।

4. GeM- पोर्टल के लाभ

GeM पोर्टल पर निविदाओं के अनुसार उचित कीमत की प्रणाली उपलब्ध है, साथ ही वस्तुओं, सेवाओं एवं **उत्पादों की सूची कीमत के साथ** उपलब्ध है एवं वस्तुओं/सेवाओं के उपयुक्त न होने की दशा में वापसी का भी प्रावधान है, समेकित रूप से यह पोर्टल खरीददार के लिए सभी आवश्यकताओं को आसानी से प्राप्त करने की **एकल खिड़की प्रणाली** है। **समेकित भुगतान प्रणाली** एवं खरीद पद्धति की तीव्रता जैसी विशेषताएँ GeM पोर्टल को अद्वितीय बनाती हैं। **यांत्रिक बुद्धिमता** एवं **मशीन लर्निंग** जैसी उन्नत तकनीकों द्वारा इसे **उपयोग-सुलभ** (user-friendly) बनाया गया है।

5. GeM- पोर्टल पर विक्रेता का पंजीकरण एवं पात्रता

विक्रेता को GeM पोर्टल पर पंजीकरण करने हेतु अपना **पैन संख्या दर्ज कर मोबाइल एवं ईमेल पर आए ओटीपी** को सत्यापित करना होता है, उसके बाद https//gem.gov.in पर जाकर अपना नाम, पता, कर-विवरण एवं बैंक खाता-संख्या आदि की जानकारी भरकर पंजीकरण की प्रक्रिया पूर्ण की जा सकती है।

कोई भी विक्रेता जो उत्पादन करता है एवं जिसके उत्पाद उपयुक्त एवं प्रमाणित होते हैं, वह इस पोर्टल पर पंजीकरण करवा सकता है। विक्रेताओं को प्रोत्साहित करने के लिए डिजिटल प्रमाण-पत्र भी वितरित किए गए हैं।

6. GeM- आँकड़ों में

वर्तमान में GeM पोर्टल पर लगभग **30 लाख से भी अधिक उत्पाद** एवं **10 हजार से ज्यादा सेवाओं एवं उत्पादों की श्रेणियाँ** उपलब्ध हैं, वर्तमान समय तक इस पोर्टल पर लगभग 3.99 लाख करोड़ रू की खरीद की जा चुकी है और **60 लाख से भी ज्यादा विक्रेता एवं सेवा प्रदाता** इस पोर्टल पर पंजीकृत हैं । GeM पोर्टल **दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा सरकारी ई- मार्केटप्लेस** बन चुका है। इस पोर्टल पर सरकारी विभाग **25 हजार से 5 लाख** रू तक की (प्रत्यक्ष खरीद रू 25 हजार तक के अलावा) खरीददारी कर सकते हैं ।

चूंकि इस पोर्टल पर विक्रेताओं पर यह बाध्यता होती है कि सेवाओं या उत्पाद को बनाने के लिए **आवश्यक सामग्री भारतीय मूल** की हो, यह **आत्मनिर्भर भारत** बनाने के सपने को भी साकार करने में मदद करता है । इस प्रकार GeM पोर्टल सरकारी विभागों में क्रय-विक्रय के लिए एक **क्रांतिकारी नवाचार** है, जो कि भविष्य में और अधिक उत्पादों एवं विक्रेताओं को इस **डिजिटल पोर्टल** से जोड़ेगा ।

राज कुमार चौधरी
कार्यालय अधीक्षक

ई-श्रम पोर्टल

श्रम एवं रोजगार मंत्रालय, भारत सरकार संगठित वर्ग को सामाजिक सुरक्षा ईएसआईसी एवं ईपीएफओ विभाग के माध्यम से प्रदान करता है । किन्तु असंगठित वर्ग के लिए सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना सरकार के लिए हमेशा चुनौतीपूर्ण रहा है जिसका कारण असंगठित वर्ग का व्यवस्थित डाटा उपलब्ध नहीं होना है । जिसका ताजा उदाहरण असंगठित वर्ग को कोविड्-19 जैसी वैश्विक महामारी में हुई परेशानियाँ है । इसी चुनौती को समाप्त करने के लिए भारत सरकार ने "ई-श्रम" नामक पोर्टल लॉन्च किया है जिसका मुख्य उद्देश्य असंगठित कामगारों का एक केंद्रीकृत डेटाबेस बनाना व प्रवासी कामगारों की वर्तमान स्थिति, पता, औपचारिक क्षेत्र से अनौपचारिक क्षेत्र और इसके विलोमत: उनकी आवाजाही का पता लगाना है जिससे असंगठित वर्ग को भी सामाजिक सुरक्षा प्रदान की जा सके ।

ई-श्रम पोर्टल का लिंक है: www.eshram.gov.in

करिश्मा सोनी
बहु-कार्य कार्मिक, हितलाभ

प्रभावी कर्मचारी

कभी चल पड़ता,
कभी रुक जाता,
कभी आगे बढ़ता,
या सहयोग पीछे से करता ।
कभी बोलता रहता,
या रहकर शांत विचारता ।
राह अकेले ढूँढता,
लेकर साथ सभी को चलता ।
खुद को आगे रखकर,
प्रेरित टीम को करता ।
हर क्षण का उपयोग कर,
निरंतर कार्यरत रहता ।
हँसता और हँसाता,
गम अपने भुलाकर,
खयाल वो सबका रखता ।
इस बदलते परिवेश में,
हरदम मुस्कुराते रहता ।

विवेक सिंघल
प्रवर श्रेणी लिपिक, वसूली शाखा

तन को जोगी सब करें, मन को बिरला कोई ।
सब सिद्धि सहजे पाइए, जे मन जोगी होइ ॥

बाल श्रम : एक सामाजिक समस्या

भारत एक विकासशील देश है, भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त हुए लगभग 75 वर्ष का समय व्यतीत हो चुका है परंतु भारत के सामने आज भी बहुत सी चुनौतियां और समस्याएँ मौजूद हैं । बाल श्रम अथवा बाल मजदूरी उन्हीं समस्याओं में से एक है। बाल श्रम हमारे समाज पर एक कलंक है।

बाल श्रम से तात्पर्य यह है कि कानून के अनुसार जब किसी लड़का अथवा लड़की की आयु 14 वर्ष से कम हो और उनसे किसी भी कारखाना/होटल/ढ़ाबों/प्रतिष्ठान/घरेलू नौकर/दुकान आदि जगहों पर मजदूरी या परिश्रम का कार्य करवाया जाता है तो उसे बाल श्रम की श्रेणी में रखते है । कूड़ा बीनने वाले/फेरी वाले/खेतों/ईट भट्ठों/निर्माण कार्यो में मजदूरी करना भी बाल श्रम की श्रेणी में आता है । बाल श्रम कानूनन अपराध है । बाल श्रम बच्चों को उनके अधिकारों से वंचित करता है।

बाल श्रम के कारण :-

1. आर्थिक कारण :- बाल श्रम के पीछे मुख्य जो कारण दृष्टिगत होता है वह है बाल श्रमिकों की खराब आर्थिक स्थिति । आर्थिक रूप से कमजोर माता-पिता अपने बच्चों को अत्यंत अल्प धनराशि की प्राप्ति के कारण बच्चों को बाल श्रमिक के रूप में काम करने के लिए भेज देते हैं । माता-पिता यह सोचते हैं कि बच्चा काम करेगा तो घर की आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा और परिवार चलाने में सुविधा होगी । इसके अतिरिक्त बच्चे सस्ते श्रमिक होते हैं । बड़ी उम्र के व्यक्ति के बजाय बच्चे कम पारिश्रमिक पर कार्य करते हैं जिससे मालिक को लाभ होता है ।

2. शैक्षिक कारण :- बाल श्रम के पीछे बच्चों के माता-पिता का अशिक्षित होना भी एक कारण है । माता-पिता शिक्षा के महत्व को नहीं समझते हैं और अपने बच्चे को स्कूल पढ़ने भेजने के बजाय काम करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं । माता-पिता सोचते हैं कि स्कूल जाने से क्या होगा और बड़ा होने पर कौनसी नौकरी लग जाएगी । ऐसा सोचकर वे अपने बच्चों को काम करने भेज देते हैं और सोचते हैं कि पैसा कमाने के साथ-साथ वह काम भी सीख जायेगा । माता-पिता अज्ञानतावश ऐसा करते हैं ।

3. पारिवारिक कारण :- कई बार ऐसे गरीब बच्चों के माता-पिता अथवा माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु हो जाती है । माता-पिता लाचार, बीमार, अपंग होते हैं । घर में और भी छोटे भाई-बहन होते हैं । ऐसी विकट परिस्थितियों में पूरे घर परिवार को चलाने की जिम्मेदारी उठाने का बोझ बच्चों के उपर आ जाता है । यह विधि की विडंबना व बच्चों का दुर्भाग्य होता है जिस दुष्चक्र में बच्चे फंसकर रह जाते हैं । बच्चों पर काम कर पैसा कमाने का दबाव आ जाता है और वे भाग्य आधारित जीवन जीने को मजबूर हो जाते हैं ।

4. सामाजिक कारण :- बाल श्रम के पीछे सामाजिक वातावरण भी जिम्मेदार होता है । बच्चा जिस वातावरण में पैदा होता है और अपने आस-पास जो देखता है उसे ही अपने जीवन का यथार्थ मान लेता है । छोटी आयु में बच्चों के अंदर सोचने-समझने और सही निर्णय लेने की क्षमता विकसित नहीं हो पाती है । ग्रामीण क्षेत्रों में जब बच्चे बड़े शहरों में जाकर काम करने लग जाते हैं तो उनकी देखा-देखी अन्य बच्चे भी ऐसा ही करने लग जाते हैं । कई बार अपने बड़े भाई-बहन, रिश्तेदार, दोस्तों द्वारा प्रोत्साहन देने के कारण भी बच्चे ऐसा करते हैं ।

5. प्रशासनिक कारण :- बाल श्रम अपराध है एवं कोई भी अपने प्रतिष्ठान/कारखाना/होटल आदि जगहों पर बच्चों को कार्य पर नहीं रख सकता है परंतु सरकार द्वारा बनाये गये कानूनों के प्रभावी क्रियान्वयन न होने व कानूनों की सख्ती से अनुपालना के अभाव में बाल श्रम अवैध रूप से चलता रहता है ।

बाल श्रम के दुष्प्रभाव :-

शोषण :- बाल श्रम का सर्वाधिक दुष्प्रभाव बच्चों का मानसिक एवं शारीरिक शोषण होता है । बच्चों से कार्यस्थल पर सुबह से देर रात तक काम करवाया जाता है और ठीक ढंग से कार्य न करने पर अथवा छोटी–बड़ी गलती हो जाने पर मारपीट की जाती है । गाली–गलोच करते हुए प्रताड़ित किया जाता है । बच्चे कई प्रकार की मानसिक एवं शारीरिक बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं । खतरनाक परिस्थितियों में काम करने पर दुर्घटना हो जाती है एवं बच्चे अपंग हो जाते हैं । बाल श्रम बच्चों के लिए एक अंधी सुरंग की तरह होता है जिसका कोई अंत नजर नहीं आता है ।

1. **शिक्षा से वंचित :-** बाल श्रम के कारण बच्चे स्कूल जाने एवं शिक्षा प्राप्त करने से वंचित हो जाते हैं । खेलने–कूदने और स्कूल जाने की आयु में अपना भविष्य निर्माण करने के बजाय बच्चे अनपढ़ रहकर अपना पूरा जीवन मजदूरी करते हुए व्यतीत कर देते हैं ।

2. **गरीबी :-** बाल श्रम के कारण गरीबी को बढ़ावा मिलता है । माता–पिता सोचते हैं कि बच्चा काम करने जा रहा है तो पैसा कमाकर लायेगा लेकिन यह एक प्रकार का अस्थायी समाधान है । ऐसे परिवार एवं बच्चे पीढ़ी–दर–पीढ़ी गरीब मजदूर ही बने रहते हैं और उनका आर्थिक विकास कभी नहीं हो पाता है। बच्चों का भविष्य अंधकारमय हो जाता है ।

3. **अपराध एवं नशाखोरी :-** बाल श्रम के कारण समाज में अपराध एवं नशाखोरी को बढ़ावा मिलता है। बाल श्रमिकों को अपने आस–पास का वातावरण सकारात्मक नहीं मिलने के कारण वह अन्य लोगों की देखा–देखी बीड़ी, सिगरेट, गुटखा, तंबाकू, शराब आदि का सेवन करने लग जाते हैं । आगे चलकर हाथ में पैसा न होने पर अथवा मजदूरी न मिलने पर छोटी–मोटी चोरियां करने लगते हैं । कई बार पेशेवर अपराधी गिरोह में फंसकर स्वयं भी अपराधी बन जाते हैं।

बाल श्रम उन्मूलन के उपाय :-

बाल श्रम रोकने में माता–पिता का शिक्षित एवं जागरूक होना नितांत आवश्यक है । माता–पिता का आर्थिक रूप से सक्षम होना भी जरूरी है । बाल श्रम उन्मूलन हेतु बनाये गये कानूनों की प्रभावी व सख्ती से अनुपालना करवाना सुनिश्चित करने की भी आवश्यकता है । यदि कानून का भय रहेगा तो कोई भी अपने यहां बच्चों को काम पर नहीं रखेगा । बाल श्रम रोकने में समाज का संवेदनशील होना भी आवश्यक है। कई बार समाज के धनवान प्रतिष्ठित लोग भी बेसहारा गरीब बच्चों का शोषण करते देखे जाते हैं ।

बाल श्रम का उन्मूलन करने के लिए सरकार द्वारा भी निरंतर प्रयास किये जाते रहे हैं । सरकार द्वारा नि:शुल्क शिक्षा, राशन, सामाजिक सुरक्षा पेंशन जैसी लोककल्याणकारी योजनाएँ भी चलाई जा रही हैं जो बाल श्रम जैसी सामाजिक बुराई को रोकने में सहायक सिद्ध होती है । सरकार द्वारा मिड–डे मिल (पोषण स्कीम) योजना भी एक बाल कल्याणकारी योजना है ताकि बच्चे स्कूल जाना बंद नहीं करें और घर से टिफिन लेकर जाने के बजाय बच्चों को स्कूल में ही पौष्टिक भोजन उपलब्ध हो सके । यह बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ पोषण के लक्ष्य को पूरा करता है ।

सरकार/सामाजिक संगठन/एनजीओ सभी को मिलकर इस क्षेत्र में कार्य करने की आवश्यकता है ताकि ऐसे गरीब, लाचार बच्चों को चिन्हित कर उन्हें सामान्य शिक्षा प्राप्त करने के उपरांत रोजगार परख शिक्षा/कौशल विकास कार्यक्रम के तहत जोड़कर प्रशिक्षित किया जा सकता है। इसके लिए अलग से आवासीय विद्यालय खोले जा सकते हैं । बच्चों को आवश्यकतानुसार छात्रवृत्ति, आर्थिक सहायता प्रदान की जा सकती है ताकि बच्चे आत्मसम्मान के साथ जीवनयापन कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ सकें ।

अरूण कुमार शर्मा
निजी सहायक

बीती बात पुरानी, याद आए सारी कहानी

बीती बात पुरानी, याद आए सारी कहानी
हँसी मजाक के किस्से, हर पल के वो हिस्से
याद आए जब आँखों में आए पानी

बचपन के खेल तमाशे, वो सारे दोस्त पुराने
साइकिल की वो पिछली सीट और भाई बहन की यारी
बीती बात पुरानी याद आए सारी कहानी

मां की गोद, पिताजी की डांट
अम्मा-बाबा का प्यार-दुलार,
घर की जिम्मेदारी और
खुद अम्मा-बाबा बनने की बारी
बीती बात पुरानी, याद आए सारी कहानी

छूट रहा है हाथ, सारी यादों का साथ
महसूस हुआ है आज, थोड़ा और रुककर
मांग लूँ माफी जिनके दिल पर किया प्रहार

जी भर कर देख लूँ, जी भर के बातें करू
जो ना कभी खत्म हो, ऐसे पल बुन लूँ
अब आई जीने की बारी, जब हो रही जाने की तैयारी
बीती बात पुरानी, याद आए सारी कहानी

चन्द्र प्रकाश चौहान
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर ।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अति दूर ।।

प्रदूषण

प्रस्तावना

बचपन में हम जब भी गर्मी की छुट्टियों में अपने दादी-नानी के घर जाते थे, तो हर जगह हरियाली ही हरियाली फैली होती थी । हरे-भरे बाग-बगिचों में खेलना बहुत अच्छा लगता था। चिड़ियों की चहचहाहट सुनना बहुत अच्छा लगता था। अब वैसा दृश्य कहीं दिखाई नहीं देता । आजकल के बच्चों के लिए ऐसे दृश्य केवल किताबों तक ही सीमित रह गये हैं। जरा सोचिए ऐसा क्यों हुआ। पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, मनुष्य, जल, वायु, आदि सभी जैविक और अजैविक घटक मिलकर पर्यावरण का निर्माण करते हैं । सभी का पर्यावरण में विशेष स्थान है।

प्रदूषण का अर्थ (Meaning of Pollution)

प्रदूषण, तत्वों या प्रदूषकों के वातावरण में मिश्रण को कहा जाता है। जब यह प्रदूषक हमारे प्राकृतिक संसाधनो में मिल जाते हैं तो इसके कारण कई सारे नकारात्मक प्रभाव उत्पन्न होते हैं । प्रदूषण मुख्यत: मानवीय गतिविधियों द्वारा उत्पन्न होता है और यह हमारे पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित करता है । प्रदूषण द्वारा उत्पन्न होने वाले प्रभावों के कारण मनुष्यों के लिए छोटी बीमारियों से लेकर अस्तित्व संकट जैसी समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं । मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए पेड़ो की अन्धाधुंध कटाई की है । जिस कारण पर्यावरण असंतुलित हो गया है । प्रदूषण भी इस असंतुलन का मुख्य कारण है।

प्रदूषण के प्रकार (Types Of Pollution)

1. वायु प्रदूषण (Air Pollution)

वायु प्रदूषण को सबसे खतरनाक प्रदूषण माना जाता है, इस प्रदूषण का मुख्य कारण उद्योगों और वाहनों से निकलने वाला धुँआ है । इन स्त्रोतों से निकलने वाला हानिकारक धुँआ लोगों के लिए साँस लेने में भी बाधा उत्पन्न कर देता है । दिन-प्रतिदिन बढ़ते उद्योगों और वाहनों ने वायु प्रदूषण में काफी वृद्धि कर दी है । जिसने ब्रोंकाइटिस और फेफड़ों से संबंधित कई तरह की स्वास्थ्य समस्याएं खड़ी कर दी है ।

2. जल प्रदूषण (Water Pollution)

उद्योगों और घरों से निकला हुआ कचरा कई बार नदियों और दूसरे जल स्त्रोतों में मिल जाता है, जिससे यह उन्हें प्रदूषित कर देता है । एक समय साफ-सुथरी और पवित्र माने जानी वाली हमारी यह नदियां आज कई तरह की बीमारियों का घर बन गई हैं क्योंकि इनमें भारी मात्रा में प्लास्टिक पदार्थ, रासायनिक कचरा और दूसरे कई प्रकार के नान बायोडिग्रेडबल कचरे मिल गये है ।

3. भूमि प्रदूषण (Soil Pollution)

वह औद्योगिक और घरेलू कचरा जिसका पानी में निस्तारण नहीं होता है, वह जमीन पर ही फैला रहता है । हालांकि इसके रीसायकल तथा पुनरुपयोग के कई प्रयास किये जाते हैं पर इसमें कोई खास सफलता प्राप्त नहीं होती है । इस तरह के भूमि प्रदूषण के कारण इसमें मच्छर, मक्खियां और दूसरे कीड़े पनपने लगते हैं, जो कि मनुष्यों तथा दूसरे जीवों में कई तरह की बीमारियों का कारण बनते हैं ।

4. ध्वनि प्रदूषण (Noise Pollution)

ध्वनि प्रदूषण कारखानों में चलने वाली तेज आवाज वाली मशीनों तथा दूसरे तेज आवाज करने वाली यंत्रो से उत्पन्न होता है । इसके साथ ही यह सड़क पर चलने वाले वाहन, पटाखे फूटने के कारण उत्पन्न होने वाली आवाज, लाउड स्पीकर से भी ध्वनि प्रदूषण में वृद्धि होती है । ध्वनि प्रदूषण मनुष्यों में होने वाले मानसिक तनाव का मुख्य कारण है, जो कि मस्तिष्क पर कई दुष्प्रभाव डालने के साथ ही सुनने की शक्ति को भी घटाता है।

5. रेडियोएक्टिव प्रदूषण (Radioactive Pollution)

रेडियोएक्टिव प्रदूषण का तात्पर्य उस प्रदूषण से है, जो अनचाहे रेडियोएक्टिव तत्वों द्वारा वायुमंडल में उत्पन्न होता है । रेडियोएक्टिव प्रदूषण हथियारों के फटने तथा परीक्षण, खनन आदि से उत्पन्न होता है । इसके साथ ही परमाणु बिजली केंद्रों में भी कचरे के रुप में उत्पन्न होने वाले अवयव भी रेडियोएक्टिव प्रदूषण को बढ़ाते है ।

6. थर्मल प्रदूषण (Thermal Pollution)

कई उद्योगों में पानी का इस्तेमाल शीतलक के रुप में किया जाता है जो कि थर्मल प्रदूषण का मुख्य कारण है । इसके कारण जलीय जीवों को तापमान परिवर्तन और पानी में आक्सीजन की कमी जैसी समस्याओं से जूझना पड़ता हैं।

प्रदूषण कम करने के उपाय (Tips for Preventing Pollution)

जब हम प्रदूषण के कारण और प्रभाव तथा प्रकारों को जान चुके हैं, तब हमें इसे रोकने के लिए प्रयास करने होंगे । इन दिए गए कुछ उपायों का पालन करके हम प्रदूषण की समस्या पर काबू कर सकते हैं।

1. कार पूलिंग ।
2. पटाखों को ना कहिये ।
3. रीसायकल/पुन:उपयोग ।
4. अपने आस-पास की जगहों को साफ-सुथरा रखकर ।
5. कीटनाशकों और उर्वरकों का सीमित उपयोग करके ।
6. पेड़ लगाकर ।
7. काम्पोस्ट का उपयोग करके ।
8. प्रकाश का अत्यधिक और जरुरत से ज्यादा उपयोग न करके ।
9. रेडियोएक्टिव पदार्थों के उपयोग को लेकर कठोर नियम बनाकर ।
10. कड़े औद्योगिक नियम-कानून बनाकर ।
11. योजनापूर्ण निर्माण करके ।

शिवम वालिया
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

मेहनत

मेहनत का फल जरूर मिलेगा
मेहनत करोगे तो भविष्य बनेगा
जीवन का आनंद तुम्हें मिलेगा

मेहनत करने से ना डरो तुम
आगे हर पल बढ़ते जाओ
ना रुको तुम आगे बढ़ते जाओ तुम
कठिनाइयों का सामना करते जाओ तुम

गम के बाद खुशी जरूर मिलेगी
जीवन में सफलता जरूर मिलेगी

मेहनत करो फल तुम्हें मिलेगा
मेहनत का फल जरूर मिलेगा

विकास जैन
शाखा प्रबंधक, शाखा कार्यालय गुलाबपुरा

माँ

माँ तो जन्नत का फूल है ,
प्यार करना उसका उसूल है ।
दुनिया की मोहब्बत फिजूल है ,
माँ की हर दुआ कबूल है ।
ऐ इंसान माँ को नाराज करना तेरी भूल है ,
माँ के कदमों की मिट्टी जन्नत की धूल है ।

दिनेश कुमार चौधरी
कार्यालय अधीक्षक

आत्म प्रेम क्यों महत्वपूर्ण है

आत्म-प्रेम, आत्म-देखभाल, आत्म-करुणा, यह स्वार्थी लग सकता है । लेकिन यह आपके मानसिक स्वास्थ्य और भलाई के लिए नितांत आवश्यक है और इसका मतलब यह नहीं है कि आपको हमेशा अपनी जरूरतों को हर किसी के ऊपर प्राथमिकता देनी होगी । कुछ भी हो, अपने आप से एक अच्छा रिश्ता रखना एक नि:स्वार्थ कार्य है । क्योंकि आप दूसरों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, यह अक्सर इस बात का प्रतिबिंब होता है कि आप अपने साथ कैसा व्यवहार करते हैं ।

हम अक्सर खुद को भूल जाते हैं और लोगों को खुश करने के लिए अपनी जरूरतों और इच्छाओं को एक तरफ रख देते हैं और भूल जाते हैं कि खुद को अच्छा महसूस कराना कितना जरूरी है । अपने आस-पास के लोगों को खुश करने की प्रक्रिया में हम सिर्फ खुद को नुकसान पहुंचाते रहते हैं । अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिए खुद के साथ अच्छे संबंध विकसित करना महत्वपूर्ण है । खुद के प्रति दयालु होने से चिंता और तनाव कम होता है, और आत्म-सम्मान और लचीलापन बनाने में मदद मिलती है । इसके अलावा, यदि आप अपने साथ अच्छे संबंध विकसित नहीं करते हैं, तो आप लोगों को खुश करने और पूर्णतावाद जैसी बुरी आदतों में पड़ सकते हैं - और आप दुर्व्यवहार या दुर्व्यवहार को सहन करने की अधिक संभावना रखते हैं ।

अपने मूल्यों के अनुरूप होने से ऐसा जीवन जीना आसान हो जाता है जो प्रामाणिक रूप से आप हैं। आत्म-प्रेम हमें मुखर होने, निर्णय लेने और हमारे जीवन में सीमाएँ निर्धारित करने का साहस देता है।

हर्षिता मालवीय
बहु-कार्य कार्मिक, प्रशासन शाखा

एकै साधै सब सधै, सब साधै सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय ।।

वो औरत है साहब सब सह जाती है

वो औरत है सब सह जाती है
पापा की नन्हीं परी बन घर को रोशन कर जाती है,
कभी जो घर की लक्ष्मी थी वो पराया धन बन जाती है,
कुछ तो जन्म लेती हैं जग में कुछ कोख में ही रह जाती हैं,
वो औरत है साहब फिर भी सब सह जाती है,
अपने भाई की जान थी जो बहन, बाहर जाने पर घबराती है,
अगर सह ले सब तो दिक्कत थी नहीं कुछ,
लेकिन जवाब दिया पलट के तो तेजाब उड़ेल दी जाती है
वो औरत है साहब फिर भी सब सह जाती है,
जोर से कभी डांटा भी नहीं था पापा ने उसे
पर आज रोज सब्जी-नमक-मिर्ची के नाम पर ताने खाती है,
कभी हल्दी लगाकर गहनों में विदा किया था जिसको चन्द नोटों की खातिर आग के हवाले कर दी जाती है,
डोली में भेजा था माँ ने जिसको हाथों से सजाकर
आज उन हाथों में सफेद कपड़े में लिपटी, एक जली लाश थमा दी जाती है,
पर वो भी एक औरत है साहब सब सह जाती है।
अरे क्यूँ भूल जाते है कि उनकी उसी कोख में ही तुम्हारे वंश का दीपक जलता है,
लहू ने उसके लिया जो रूप दूध उससे ही वो पलता है,
बिना उस आँचल की छाँव में क्या किसी का बचपन गुजरता है?
पर जिसको जीवन दिया उसने उससे ही वो मारी, कुचली, रोन्धी, दबाई, जलाई जाती है
फिर भी वो औरत है साहब सब सह जाती है ।

युगवीर शर्मा
सहायक, वसूली शाखा

कृत्रिम बुद्धिमता

कृत्रिम बुद्धिमता एक ऐसी बुद्धिमता है जो मशीन लर्निंग ओर एक्सपर्ट सिस्टम की मदद से विकसित की जाती है । यह बुद्धिमता कंप्यूटर और अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा संभव होती है । कृत्रिम बुद्धिमता विभिन्न क्षेत्रों में उपयोग की जाती है, जैसे कि वित्तीय सामान्य ज्ञान, विपणन, वित्तीय विश्लेषण, संचार, स्वास्थ्य सेवाएं, स्वचालित वाहन और विज्ञान आदि । यह सिस्टम डेटा विश्लेषण, संग्रह और सूचित करने में मदद करती है और नए और अधिक संभावनाओं का पता लगाने में मदद करती है । कृत्रिम बुद्धिमता की सहायता से कंप्यूटर सिस्टम नए ज्ञान और समस्याओं का हल खोजने में सक्षम होते हैं। इस तरह से वे बिना मानव के सहयोग के भी नए और स्वतंत्र रूप से निर्णय ले सकते हैं। इसलिए, कृत्रिम बुद्धिमता आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण है और इसका उपयोग बढ़ता जा रहा है एवं कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग करके विश्व के कई क्षेत्रों में विकास करने के लिए नए तरीके बनाए जा रहे हैं । और इससे मानव जीवन को बेहतर बनने में मदद मिलती है ।

कृत्रिम बुद्धिमता ने आधुनिक दुनिया में बहुत से लाभ प्रदान किए हैं लेकिन कुछ दुष्प्रभाव भी हैं जो इसके उपयोग से हो सकते हैं।

1. कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग करने से आमतौर पर लोगों को नौकरियों की हानि होती है। इसलिए अधिकतर बड़ी कंपनियों ने अपनी कुशलता को बढ़ाने के लिए और जॉब्स को बचाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग करते हुए लोगों को प्रशिक्षित करने के लिए पहल की है।

2. गोपनीयता की चुनौती: कृत्रिम बुद्धिमता द्वारा संग्रहित डेटा में बहुत से व्यक्तिगत विवरण शामिल होते हैं जो आपकी गोपनीयता को खतरे में डाल सकते हैं। यदि यह डेटा सुरक्षित नहीं होता है, तो इससे आपकी गोपनीयता की चुनौती हो सकती है ।

3. गलत फैसलों की संभावना: कृत्रिम बुद्धिमता सिस्टम डेटा पर आधारित होती है, लेकिन यदि इसमें गलत डेटा शामिल हो तो यह गलत फैसलों की संभावना बढ़ाता है ।

अत: अंत में यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यदि मानव की जगह कृत्रिम बुद्धिमता का उपयोग मानव सभ्यता के लिए हानिकारक न सिद्ध हो, इस दिशा में उचित नीतियाँ बनाकर कार्य किया जाए तो किसी भी देश की प्रगति में मील का पत्थर साबित होगा ।

भारतेंदु मुद्गल
प्रवर श्रेणी लिपिक, राजस्व शाखा

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय

शाखा कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा नि
सुविधा समागम

शाखा कार्यालय
कर्मचारी राज्य बीमा निगम
सुविधा समागम

पत्रिका

ईएसआईसी बीमितों का जागरूकता शिविर

उदयपुर. कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से विशेष सेवा पखवाड़ा के दौरान की गई गतिविधियों के संदर्भ में उप क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा लिपि डाटा, मादड़ी, उदयपुर में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर के दौरान बीमितों को कराधी योजना के अंतर्गत हितलाभों एवं अन्य योजनाओं में जानकारी भी प्रदान की गई। की शंकाओं का निवारण किया शिविर में राजीव लाल, प्रवीन्द्र गुप्ता, संदीप चौधरी और कर्मचारी मौजूद रहे।

ईएसआई बीमितों का उदयपुर में जागरूकता शिविर आयोजित

कर्मचारी राज्य बीमा निगम कार्यालय में राजभाषा प्रशिक्षण

उदयपुर। कर्मचारी राज्य बीमा निगम कार्यालय में उप-निदेशक (प्रभारी) राजीव लाल की अध्यक्षता में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला एवं राजभाषा प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। कार्यशाला में 15 ... कार्यालय कार्मिकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान ... प्रभारी ने निगम की ... पर व्याख्यान दिया ... अन्य अधिकारियों ने भी कार्यालय पद्धति एवं ... आदि पर व्याख्यान दिया ... अतिथि वक्ता नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति उदयपुर के ... सचिव एवं ... विशेषज्ञ ... ने भी हिंदी के प्रचार प्रसार में सूचना एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न ई-टूल्स का प्रयोग ... पर व्याख्यान देकर प्रतिभागियों का हिंदी के प्रति ज्ञानवर्धन किया। कार्यशाला का संचालन अनुवाद अधिकारी बाबूलाल मीणा ने किया।

चिकित्सा शिविर

कर्मचारी राज्य बीमा निगम ने वि...
सेवा पखवाड़ा के तहत सोमवार...
चिकित्सा शिविर में 100 से अधि...
...मित को चिकित्सा परामर्श के...
...थ ही ब्लड प्रेशर, शुगर व अ...
...की जांच की गई। क्षेत्रीय कार्या...
...के उपनिदेशक प्रभारी राजीव...
...ने बताया कि शिविर में निगम द्वा...
दी जा रही विभिन्न नियमित
कल्याणकारी योजनाओं चिकि...
प्रसूति बीमारी, अस्थाई अपंगता,
स्थाई अपंगता, आश्रितजन हितल...
तथा अंतेष्टि व्यय की जानकारी
गई। शिविर में सहायक निदेशक
कमलेश कुमार मीना, डॉ. सुरेन्द्र...
पटेल, शाखा प्रबंधक बाबूलाल...
और अन्य कार्मिकों ने सेवाएं दी...
निगम का 24 फरवरी से चल...
विशेष पखवाड़ा 10 मार्च तक च...

जागरूकता शिविर का किया आयोजन

...सोमवार को जोजरों का खेड़ा स्थित मनोमय टैक्स इंडिया लिमि... ने कर्मचारी राज्य बीमा निगम के तहत जागरूकता शिविर का आयो... किया गया। जिसमें ईएसआई शाखा प्रबंधक दिनेश मीणा ने कर्मचारी ... ईएसआई के तहत मिलने वाले चिकित्सीय लाभों के बारे में ... और किस प्रकार से चिकित्सीय लाभ लिया जा सकता है ... बारे में जानकारी दी। कंपनी के अनिल पोरवाल एवं भगवती लाल और ... कर्मचारी उपस्थित थे।

विशेष सेवा पखवाड़ा दिवस के तहत जागरूकता शिविर का आयोजन

राजसमंद। जेके टायर एण्ड इंडस्ट्रीज लिमिटेड कांकरोली में आयोजित शिविर में अतिथियों का स्वागत करते अधिकारी। फोटो- मुबारिक हुसैन

राजसमंद। कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से चलाए जा रहे विशेष सेवा पखवाड़ा दिवस के अंतर्गत सोमवार को कर्मचारी राज्य बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा कांकरोली के जेके ग्राम स्थित जेके टायर एण्ड इंडस्ट्रीज लिमिटेड कंकरोली में जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत विभिन्न अस्पतालों से उपस्थित चिकित्सकों एवं उनके टीम के द्वारा चिकित्सा सेवाओं का कर्मचारियों ने लाभ उठाया।

उप निदेशक राजीवलाल, सहायक निदेशक कमलेश कुमार मीणा, शाखा प्रबंधक बाबूलाल मीणा ने कंपनी में कार्यरत श्रमिकों को ईएसआईसी की विभिन्न योजनाओं के तहत दिए जाने वाले हित लाभों की जानकारी दी। इस दौरान कपनी की ओर से मुख्य महा प्रबन्धक अनिल मिश्रा, महा प्रबन्धक राकेश श्रीवास्तव, रवि पंत, अजय कुमार, सुभाष सहित अन्य अधिकारी मौजूद थे।

बीमितों को दी योजनाओं की जानका...

उदयपुर | कर्मचारी राज्य बीमा निगम की ओर से विशेष सेवा पखवाड़ा के दौरान की गई गतिविधियों के तहत उप क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा लिपि डाटा मादड़ी में जागरूकता शिविर लगा। इसमें बीमितों को देय हितलाभों एवं अन्य योजनाओं के बारे में जानकारी दी। बीमितों ... समस्याओं का निवारण भी ... गया। इस दौरान प्रभारी उपनिदे... राजीवलाल, शाखा प्रबंधक प्र... कुमार गुप्ता, सामाजिक सु... अधिकारी संदीप चौधरी ... कर्मचारी मौजूद रहे।

दैनिक भास्कर उदयपुर 03-03-2023

सेवा पखवाड़े में लगा चिकित्सा शिविर

उदयपुर | कर्मचारी राज्य बीमा निगम के विशेष सेवा पखवाड़ा के तहत विभिन्न गतिविधियां हुईं। इसमें उप क्षेत्रीय कार्यालय की ओर से पायरोटेक इलेक्ट्रोनिक्स प्राइवेट लिमिटेड यूनिट-4, मादड़ी में चिकित्सा सह जागरूकता लगा। इसमें 100 से अधिक बीमितों को परामर्श दिया। साथ ही निगम चिकित्सालय, एएसजी आई हॉस्पिटल एवं गीतांजली हॉस्पिटल की ओर से ब्लड शुगर, बीपी, आंखों की जांच की गई।

...र्मचारी राज्य बीमा निगम ने मनाया विशेष सेवा प...

...वाड़ा | कर्मचारी राज्य बीमा निगम (...एसआईसी) ने अपने स्थापना दिवस के ...क्ष्य में 24 फरवरी से 10 मार्च तक ...ष सेवा पखवाड़ा मनाया। जिसके तहत ... नितिन स्पिनर्स, चित्तौड़गढ़ रोड, ...ड़ा में श्रमिकों के लिए जागरुकता ... का आयोजन किया गया। जिसमें ...न के वाइस प्रेसीडेंट के.एल. पारिक, ...आर. पी.एन. जोशी, डी.जी.एम. ..., महिपाल सिंह, मैनेजर एच.आर ...त थे। निगम के शाखा प्रबंधक ललित

किशोर महावर ने श्रमिकों को ... बीमा निगम से मिलने वाले ल... जानकारी दी तथा कार्यालय ... मीना ने श्रमिकों की संबंधित ... निपटारा किया।

Jaina Offset Printers: 9811269844